Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

وَاَنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ۛ وَاَحْسِنُوْا اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ○

(सूरतुल बक़रा आयत :196)

अनुवाद: और अल्लाह के मार्ग में खर्च करो और अपने हाथों से अपने आप को हलाक मत करो। और उपकार करो अल्लाह उपकार करने वालों को पसन्द करता है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 3

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 28

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

27 शव्वाल 1439 हिजरी कमरी 12 वफा 1397 हिजरी शमसी 12 जुलाई 2018 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया कि कश्ती नूह में हमारी शिक्षा का जो भाग है वह ज़रूर हर अहमदी को पढ़ना चाहिए बल्कि पूरी कश्ती नूह ही पढ़ें।

जो मनुष्य झूठ और धोखा धड़ी को नहीं छोड़ता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य संसार के मोह में फंसा हुआ है, और आख़िरत की ओर आंख उठाकर भी नहीं देखता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य वास्तव में दीन (धर्म) को दुनिया पर प्राथमिकता नहीं देता वह मेरी जमाअत में से नहीं है।

जो मनुष्य प्रतिदिन पांचों समय की नमाज़ को अपने जीवन की दिनचर्या नहीं बनाता वह मेरी जमाअत में से नहीं है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

इन सब बातों के पश्चात मैं फिर कहता हूं कि यह मत सोचो कि हमने प्रत्यक्ष रूप से बैअत कर ली है। प्रत्यक्ष कुछ नहीं ख़ुदा की दृष्टि तुम्हारे दिलों पर है और उसी के अनुसार तुमसे व्यवहार करेगा। देखो, मैं यह कहकर प्रचार के कर्तव्य से निश्चिंत होता हूं कि पाप एक विष है इसको मत पियो। ख़ुदा की आज्ञा का पालन न करना एक घृणित मृत्यु है, उससे बचो। प्रार्थना करो ताकि तुम्हें शक्ति प्राप्त हो। जो मनुष्य प्रार्थना के समय ख़ुदा को हर बात पर सर्व शक्तिमान नहीं समझता सिवाए उसके वायदों के अपवाद के, वह मेरी जमाअत में से नहीं। जो मनुष्य झूठ और धोका धड़ी को नहीं छोड़ता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य संसार के मोह में फंसा हुआ है, और आख़िरत की ओर आंख उठाकर भी नहीं देखता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य वास्तव में दीन (धर्म) को दुनियां पर प्राथमिकता नहीं देता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य पूर्ण रूपेण प्रत्येक बुराई और प्रत्येक दुष्कर्म अर्थात मदिरा, जुआ, बुरी दृष्टि, ख़यानत, रिश्वत और प्रत्येक अनुचित व्यवहार से तौबा नहीं करता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य प्रतिदिन पांचों समय की नमाज़ को अपने जीवन की दिनचर्या नहीं बनाता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य दुआ (प्रार्थना) में निरंतर लगा नहीं रहता और शालीनता से ख़ुदा का स्मरण नहीं करता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य दुष्ट साथी को नहीं छोड़ता जो उस पर दुष्प्रभाव डालता है वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य अपने माता-पिता का आदर-सम्मान नहीं करता और पुण्यादेशों में जो क़ुर्आनी शिक्षा के विरोधी नहीं, उन की आज्ञा का पालन नहीं करता और उनकी सेवा के कर्तव्य से लापरवाह है वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य अपनी पत्नी और उसके संबंधियों से उदारता और शालीनता का व्यवहार नहीं करता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य अपने पड़ोसी को तुच्छ से तुच्छ भलाई से भी वंचित करता है वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य नहीं चाहता कि अपने दोषी का दोष क्षमा करे और द्वेष भाव रखता है वह मेरी जमाअत में से नहीं है।

प्रत्येक मनुष्य जो अपनी पत्नी से और पत्नी अपने पति से ख़यानत का व्यवहार करती है वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य उस प्रतिज्ञा को जो उसने बैअत करते समय की थी किसी प्रकार भी तोड़ता है वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो वास्तव में मुझे मसीह मौऊद और महदी नहीं समझता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य पुण्यादेशों में मेरी आज्ञा पालन करने के लिए तैयार नहीं वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य विरोधियों के साथ बैठकर उनका समर्थन करता है वह मेरी जमाअत में से नहीं है। प्रत्येक बलात्कारी, दुराचारी,शराबी, ख़ूनी, चोर, जुआरी, धरोहर को हड़पने वाला, घूस लेने वाला, दूसरों का अधिकार हनन करने वाला, अत्याचारी, झूठा, पाखण्डी और उसका साथी, अपने भाई बहनों पर अनुचित आरोप लगाने वाला, जो अपने दुष्कर्मों को त्यागकर क्षमा याचना नहीं करता और बुरी संगत का परित्याग नहीं करता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। यह सब विष हैं तुम इनका विषपान करके किसी भी प्रकार बच नहीं सकते। अंधकार व प्रकाश एक स्थान पर एकत्र नहीं हो सकते। प्रत्येक मनुष्य जो पेचीदा स्वभाव रखता है और ख़ुदा के साथ स्वच्छ और पवित्र संबंध नहीं रखता वह उस अनुकम्पा को कदापि प्राप्त नहीं कर सकता जो स्वच्छ और पवित्र हृदय वालों को प्राप्त होती है। क्या ही सौभाग्यशाली हैं वे लोग जो अपने हृदयों को हर दोष से पवित्र कर लेते हैं और अपने ख़ुदा से वफ़ादारी का दृढ़ संकल्प करते हैं, क्योंकि वे कदापि व्यर्थ नहीं किए जाएंगे। संभव नहीं कि परमेश्वर उनको अपमानित होने दे क्योंकि वे ख़ुदा के हैं और ख़ुदा उनका, वे प्रत्येक आपदा और विपदा के समय सुरक्षित रखे जाएंगे। मूर्ख है वह शत्रु जो उनको अपनी शत्रुता का लक्ष्य बनाए, क्योंकि वे ख़ुदा की गोद में हैं और ख़ुदा उनका सहायक है। ख़ुदा पर किसकी आस्था है ? केवल उन्हीं की जिनका उल्लेख ऊपर किया गया है। इसी प्रकार वह मनुष्य भी मूर्ख है जो एक मुंहफट पापी, दुष्ट, दुराचारी के अधीन है क्योंकि उसका स्वयं विनाश होगा। ख़ुदा ने जब से धरती और आकाश की रचना की कभी ऐसा अवसर नहीं आया कि उसने सज्जन पुरुषों को धरती से नष्ट कर दिया हो, अपितु वह उनके लिए बड़े-बड़े कार्यों का प्रदर्शन करता रहा है और अब भी करेगा । वह ख़ुदा असीम वफ़ादार है, और वफ़ादारों के लिए उसके अद्भुत कार्य प्रदर्शित होते हैं। दुनिया चाहती है कि उनको मिटा दे और प्रत्येक

शेष पृष्ठ 16 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

जलसा सालाना ब्रिटेन 2017 ई के अवसर पर सय्यदना हज़रत अमीरूल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ की व्यस्तता (अन्तिम भाग-8)

☆ मैं बहुत आशावादी हूं और सकारात्मक सोच रखता हूं, वास्तविक इस्लाम का संदेश पूरी दुनिया तक ज़रूर पहुंचेगा और यह हमारा लक्ष्य है कि सारी दुनिया को महसूस हो कि एक स्त्रष्टा है, एक सर्वशक्तिमान अल्लाह तआला है, एक दूसरे का सम्मान करते हुए ही हम ने यह लक्ष्य हासिल करना है और कयामत तक इस संदेश को नहीं छोड़ना।

(बी. बी. सी विश्व के पत्रकार से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ से साक्षात्कार)

दुनिया के विभिन्न देशों से जलसा में शामिल होने वाले प्रतिनिधियों की हज़रत अमीरूल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ से मुलाकातें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ की इन दिनों में असामान्य व्यस्तता का संक्षिप्त उल्लेख

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

इसके बाद कार्यक्रम के अनुसार सदर जमाअत और मुबल्लिग़ इन्चार्ज Belize ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ दफतरी मुलाकात का सौभाग्य पाया। पंजीकरण के हवाले से मुबल्लिग़ इन्चार्ज ने अर्ज़ किया कि अभी तक पंजीकरण तो नहीं हुई लेकिन जो पुरानी पंजीकरण थी उसकी वजह से हमें exemption मिल गई है। हम अपने केंद्र और मस्जिद के लिए एक भूमि खरीद सकते हैं। उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: सारी समीक्षा लेकर भिजवाएं कि भूमि कितने की है, कहाँ मिलती है, शहर से कितनी बाहर है, क्या क्षेत्रफल है, क्या कीमत है, कौन सा क्षेत्र है। सभी चीज़ों की समीक्षा करें और अपनी रिपोर्ट जमा करें। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: एफ.एम रेडियो के लिए लाइसेंस नहीं मिल सकता है? इस का भी पता करें।

मुबल्लिग़ के पूछने पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: धर्म यही कहता है, कि माफ़ करो और आपराधिक अपराधी को दंड दो ताकि उस का सुधार हो। वास्तविक उद्देश्य सुधार है क्षमा या सज़ा जिस से सुधार होता है वह धारण करो। हम ने धर्म की शिक्षा बतानी है अगर कोई नहीं मानता तो उस की अपनी इच्छा है। हुज़ूर अनवर ने फरमाया अब किसी जान के कत्ल करने का जुर्म है। इस बारे में अल्लाह तआला फरमाता है कि मैं जुर्म करने वाले को जहन्नुम में डालूंगा। जमाअत तो केवल शिक्षा तथा तरबियत के बारे में कोशिश कर सकती है और ध्यान दिला सकती है। हुकूमत पकड़े और सज़ा दे। उम्र कैद है तो उम्र कैद दे। यह हुकूमत का काम है अब इन को इस्लामी सज़ाओं की तरफ आना पड़ेगा। जान के बदला में जान के आदेश पर अनुकरण करें तो जुर्म कम होंगे।

इस के बाद अमीर तथा मुबल्लिग़ इन्चार्ज साहिब सेनेगाल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज के साथ दफ्तरी मुलाकात की। अमीर साहिब ने कहा कि शहर के बाहर हमारे पास बड़े पैमाने पर ज़मीन है। केंद्रीय मस्जिद और केंद्र केंद्र बनाने की योजना है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज ने फरमाया: जो भी योजना बनाई गई है उसे करें। निर्माण विभिन्न चरणों में किया जाना चाहिए। आर्किटेक्ट्स जाऐंगे, जगह देखें, और फिर समीक्षा करेंगे। जो नक्शा आप ने बनाया है वह आर्किटेक्ट्स विभाग को दे दें। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज ने फरमाया जहां जमाअतें हैं, वहां आप छोटे मिशन और मस्जिदें बना सकते हैं। जहां आप के पास ज़मीनें मिली हुई हैं स्थान मिले हुए हैं वहां समीक्षा करें कि एक छोटी मस्जिद और मिशन हाऊस बनाने में कितना खर्च होता है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने हिदायत देते हुए फरमाया कि अपने सम्पर्क बढ़ाएं। अधिकतम फील्डवर्क करें। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने रेडियो स्टेशन के लगाने के बारे में फरमाया, कि आपको आवेदन करना चाहिए। प्रक्रिया में समय तो लगेगा। बुर्किना फासो वालों को अनुभव है, वे आपको बताएंगे कि क्या जरूरत है और कैसे स्थापित करना है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: आप को और अधिक केन्द्रीय मुबल्लिग़ों की जो मांग है वह लिखकर तबशीयर दे दें। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने ट्रांस्पोर्ट की ज़रूरत के हवाला से फरमाया कुछ हिदायतें प्रदान फरमाईं।

इसके बाद मुबल्लिग़ सिलसिला कनाडा असफनद सुलेमान अहमद साहिब ने हुज़ूर अनवर से दफ्तरी मुलाकात का सौभाग्य पाया और कुछ प्रशासनिक मामले हुज़ूर अनवर की सेवा में पेश करके मार्गदर्शन प्राप्त किया।

इस के बाद में इन्चार्ज साहिब मख़ज़ने तस्वीर यूके, इन्चार्ज साहिब सेक्शन कार्यालय निजी सचिव, इन्चार्ज साहिब रकीम प्रेस यूके और एम टी ए के डायरेक्टर प्रोग्रामिंग ने बारी बारी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ से दफ्तरी मुलाकातें कीं और अपने अपने विभागों के मामले प्रस्तुत कर के अलग दिशा-निर्देश प्राप्त करे ।

दफ्तरी मुलाकातों का यह कार्यक्रम दो बजे तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद फज़ल लंदन में पधार कर नमाज़े ज़ोहर व अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज की नमाज़ के बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ अपने निवास में पधारे।

व्यक्तिगत और परिवार की मुलाकातें

कार्यक्रम के अनुसार आज शाम सवा पांच बजे विभिन्न देशों से आने वाले जमाअत के मित्रों और परिवार की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ से मुलाकात शुरू हुईं। आज 16 फैमलीज़ के 90 व्यक्ति और इसके अलावा 23 मित्रों ने व्यक्तिगत रूप से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज से मुलाकात का सौभाग्य पाया। इस तरह 113 लोगों ने मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया।

मुलाकात करने वाली यह परिवार निम्नलिखित 14 देशों से आए थे। पाकिस्तान, कनाडा, अमेरिका, ग्वाटेमाला, सिएरा लियोन, भारत, जर्मनी, हॉलैंड, फ्रांस, जाम्बिया, केन्या, आयरलैंड, न्यूजीलैंड और ब्रिटेन। उनमें से प्रत्येक ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर बनाने के सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों तथा छात्राओं को कलम प्रदान किए और छोटी आयु के बच्चे तथा बच्चियों को चाकलेट प्रदान किए।

मुलाकातों का यह कार्यक्रम आधी रात तक जारी रहा। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज ने मस्जिद फज़ल में पधार कर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों को अदा करने का बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज अपने निवास स्थान पर पधारे।

14 अगस्त 2017 ई (दिनांक सोमवार)

आज आदरणीय नाज़िर साहिब आला, आदरणीय नाज़िर साहिब दीवान, आदरणीय ऐडमनसटरेटर साहिब ताहिर हार्ट इंस्टीट्यूट, आदरणीय इन्चार्ज साहिब होम्योपैथी विभाग, आदरणीय ऐडीटर साहिब रियूयू आफ रिलेजनज़, आदरणीय अतिरिक्त

शेष पृष्ठ 13 पर

ख़ुत्बः जुमअः

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबी हज़रत उक्काशा बिन मुहसिन, हज़रत ख़रिजा बिन ज़ैद , हज़रत ज़याद बिन लुबैद, हज़रत मुतअब बिन उतैब, हज़रत ख़लिद बिन बुकैर रिज़वानुल्लाह अलैहिम की नैतिकता, आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत, श्रद्धा तथा वफा धार्मिक सेवाएं, और महान कुरबानियों का ईमान वर्धक वर्णन।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 1 जून 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक सहाबी उक्काशा बिन मुहिसन थे। हज़रत उक्काशा बिन मुहसिन की गिनती बड़े सहाबा में होती है। आप बदर के अवसर पर घोड़े पर सवार हो कर शामिल हुए। उस दिन आप की तलवार टूट गई। इस पर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप को एक लकड़ी दी मानो वह आप के हाथ में तेज़ और साफ लोहे की तलवार बन गई और आप इसी से लड़े यहां तक कि अल्लाह तआला ने आप को फतह दे दी। फिर उसी तलवार के साथ आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सभी जंगों में शामिल हुए और यह लकड़ी की तलवार मृत्यु तक आप के पास ही थी। उसका तलवार का नाम औन था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें ख़ुशखबरी सुनाई थी कि आप बिना किसी हिसाब किताब के जन्नत में प्रवेश करोगे।

(असदुल ग़ाबा पृष्ठ 64-65 उक्काशा बिन मुहसिन प्रकाशक दारुल कुतुब इलमिया बैरूत 1996 ई)

जंग बदर के अवसर पर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा से फरमाया कि अरब का सब से बेहतरीन घुड़सवार हमारे साथ शामिल है। सहाबा ने पूछा हे रसूलल्लाह वह कौन व्यक्ति है फरमाया उक्काशाा बिन मुहिसन।

(सीरत इब्ने हश्शाम पृष्ठ 435दारुल कुतुब इलमिया बैरूत 2001 ई)

हज़रत अबु हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो से वर्णित है कि मैंने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना आपने फ़रमाया कि मेरी उम्मत से एक समूह जन्नत में प्रवेश कर जाएगा वह सत्तर हज़ार होंगे और उनके चेहरे चौदहवीं रात के चाँद की तरह चमकदार होंगे। हज़रत अबु हुरैरा बताते हैं कि हज़रत उक्काशा बिन मुहसिन अपनी चादर उठाते हुए खड़े हुए और अर्ज़ किया कि हे रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला से दुआ करें कि मुझे भी उनमें से बना दे तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया हे अल्लाह तआला इसे भी इन में शामिल कर दे। फिर अंसार से एक आदमी खड़ा हुआ और अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला से दुआ करें कि मुझे भी उन में से बना दे तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि "सबकक बेहा उक्काशा।" कि उक्काश इस बारे में तुम से आगे बढ़ गया है।

(कहीह मुस्लिम किताबुल ईमान हदीस 369)

इस घटना को वर्णन करते हुए अपनी सीरत की किताब में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने लिखा है कि एक बार आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मजलिस में ज़िक्र हुआ कि मेरी उम्मत में से सत्तर हज़ार लोग बिना हिसाब जन्नत में प्रवेश करेंगे अर्थात वे ऐसे आध्यात्मिक स्तर पर होंगे कि उनके लिए खुदाई कृपा इतनी जोश में हो जाएगी कि उनके हिसाब किताब की जरूरत नहीं होगी और आप ने यह भी फरमाया कि उनके चेहरे क़यामत के दिन चमकेंगे, क्योंकि चौदहवीं रात को चांदनी आकाश पर चमकती है। इस अवसर पर हज़रत उक्काशा ने वर्णन किया कि मेरे लिए भी दुआ करें कि अल्लाह तआला उन को भी इस में शामिल कर दे। इस पर हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब का विश्लेषण बहुत सुन्दर स्पष्टीकरण के रूप में वर्णित है। आप लिखते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मजलिस की यह एक बहुत छोटी सी घटना अपने अंदर कई मआरिफ़ के खज़ाने रखती है क्योंकि प्रथम तो इससे यह ज्ञान प्राप्त होता है कि उम्मते मोहम्मदिया में अल्लाह तआला का इतना फज़ल तथा रहम है और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का रूहानी फैज़ इस पूर्णता को पहुंचा हुआ है कि आप की उम्मत में से सत्तर हज़ार ऐसे लोग होंगे जो अपने स्पष्ट आध्यात्मिक स्थान और अल्लाह तआला की विशेष कृपा के कारण मानो क़यामत के दिन हिसाब तथा किताब की परेशानी से ऊंचे समझे जाऐंगे। (सत्तर हज़ार से यह भी मुराद ली जाती है कि एक बड़ी संख्या होगी।) दूसरे इससे यह भी पता चलता है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला के दरबार में ऐसी निकटता प्राप्त है कि आप की आध्यात्मिक शक्ति पर अल्लाह तआला ने तुरंत कशफ़ या इलका के माध्यम से आप को यह ज्ञान दे दिया कि उक्काशा भी सत्तर हज़ार के समूह में शामिल है और यह भी संभव है कि उक्काशा पहले से इस समूह में शामिल न हो लेकिन आप की दुआ के परिणाम में अल्लाह तआला ने उसे यह श्रेय दे दिया हो। तीसरे इस घटना से यह भी पता चलता है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला का इतना सम्मान ध्यान में रखते थे कि आप अपनी उम्मत में संघर्ष को इतनी अधिक तरक्की देना चाहते थे कि जब उक्काशा के बाद एक दूसरे व्यक्ति ने आप से उसी प्रकार की दुआ के लिए प्रार्थना किया तो आपने इस पवित्र समूह को प्राप्त आध्यात्मिक स्थान के बावजूद, अधिक व्यक्तिगत प्रार्थना स्वीकार करने से इंकार कर दिया। और मुसलमानों को तक्वा और ईमान और नेक कामों में तरक्की करने की तरफ ध्यान दिलाया और यह ध्यान दिलाया कि यदि इस तरफ ध्यान रहेगा तो तुम्हें स्थान मिल सकता है। चौथे इससे आप की उच्च नैतिकता पर (अर्थात आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उच्च आचरण) भी असामान्य रोशनी पड़ती है क्योंकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इनकार ऐसे रंग में नहीं किया जिससे सवाल करने वाले अंसारी का दिल टूटे बल्कि एक निहायत सूक्ष्म रंग से इस बात को टाल दिया।"

(उद्धरित सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन हज़रत मिर्ज़ी बशीर अहमद साहिब एम ए पृष्ठ 667-668)

हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उक्काशा को विभिन्न युद्धों में, जो फौजें जाती थीं उन में अमीर बना कर भेजा। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रबीउल अव्वल छह हिजरी में हज़रत उक्काशा को चालीस मुसलमानों का अफसर बनाकर कबीला बनी असद के मुकाबला में रवाना किया। यह कबीला एक चश्मा के पास डेरा डाले पड़ा था। जिसका नाम ग़मर था जो मदीना से मक्का की दिशा मैं कुछ दिनों की दूरी पर था। उक्काशा की पार्टी जल्दी जल्दी यात्रा करके उन के निकट पहुंची और उन्हें शरारत करने से रोका जाए, तो मालूम हुआ कि कबीला के लोग मुसलमानों की ख़बर पाकर इधर उधर फैल गए हैं। इस पर उक्काश और उन के साथी मदीना की तरफ वापस लौट आए और कोई लड़ाई नहीं हुई।(उद्धरित सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन हज़रत मिर्ज़ी बशीर अहमद साहिब एम ए पृष्ठ 666) अर्थात जो आरोप लगाया जाता है कि उन लोगों को या मुसलमानों को जंगों का विशेष शौक था परन्तु उन लोगों ने उन से अकारण जंग की कोशिश भी न की।

हज़रत इब्ने अब्बास वर्णन करते हैं कि जब आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर सूरः अन्नसर नाज़िल हुई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत बिलाल को अज़ान देने का आदेश दिया। नमाज़ के बाद, आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक ख़ुत्बा दिया जो लोगों ने सुना जिसे लोग सुन कर बहुत रोए। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा मैं कैसा नबी हूँ। उस पर उन लोगों ने कहा अल्लाह तआला आप को इनाम दे आप सबसे अच्छे नबी हैं। आप हमारे लिए रहीम पिता की तरह और शफीक और नसीहत करने वाले भाई की तरह हैं। आप ने हम तक अल्लाह तआला के संदेश पहुंचाए और उस की वह्यी पहुंचाई और हिक्मत और अच्छी सलाह से हमें अपने रब्ब के मार्ग की तरफ बुलाया, इसलिए अल्लाह तआला आपको बेहतरीन बदला दे जो वह अपने निबयों को देता है। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया हे मुस्लिमों के गिरोह, आपको अल्लाह तआला की कसम और तुम पर अपने अधिकार को वर्णन कर के कहता हूं कि "यदि किसी पर मेरी तरफ से कोई ग़लती या अत्याचार हो गया है, तो वह खड़ा हो और वह मेरे से बदला ले ले।" मगर कोई खड़ा नहीं हुआ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दूसरी बार कसम देकर कहा लेकिन कोई खड़ा नहीं हुआ आप ने तीसरी बार फिर से कहा, हे मुसलमानों के समूह मैं तुम्हें अल्लाह तआला और तुम पर अपने अधिकार की कसम देकर कहता हूं कि अगर किसी पर मेरी ओर से कोई दुर्व्यवहार किया गया है या दुर्व्यवहार हुआ है, तो वह उठे और मुझ से क़यामत के दिन से पहले बदला ले ले। उस पर लोगों में एक बूढ़ा आदमी जिसका नाम उक्काशा था। मुसलमानों के बीच में से होता हुआ सामने आया यहां तक कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने खड़े हो गया और कहने लगा हे अल्लाह के रसूल मेरे माता पिता आप पर कुरबान अगर आप ने बार बार कसम न दी होती तो मैं कदापि खड़ा न होता। हज़रत उक्काशा कहने लगे मैं आप के साथ एक जंग में था। जिस से वापसी पर मेरी ऊंटनी आप की उंटनी के निकट आ गई तो मैं अपनी सवारी से उतर कर आप के निकट आया ताकि आप के पांव को चूमूं मगर आप ने अपनी छड़ी मारी जो मुझे लगी। मुझे नहीं मालूम के वह छड़ी आप ने ऊंटनी को मारी या मुझे मारी थी। इस पर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया अल्लाह के प्रताप की कसम ख़ुदा का रसूल जान बूझ कर तुझे नहीं मार सकता। फिर आप ने हज़रत बिलाल को सम्बोधित कर के फरमाया "हे बिलाल! फातिमा के घर की तरफ जाओ और उस से वह छड़ी लेकर आओ। हज़रत बिलाल गए और हज़रत फातिमा ने पूछा, रसूलुल्लाह की बेटी मुझे वह छड़ी दे दें। इस पर हज़रत फातिमा ने उससे कहा, हे बिलाल! मेरे पिता इस छड़ी के साथ क्या करेंगे, क्या यह युद्ध के दिन की बजाय हज का दिन नहीं है? इस पर, हज़रत बिलाल ने कहा, "हे फातिमा, आप अपने पिता रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बहुत अनजान हैं।" आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लोगों को अलविदा कह रहे हैं और दुनिया छोड़कर जा रहे हैं और अपना बदला दे रहे हैं। इस पर हज़रत फातिमा ने आश्चर्य से पूछा, हे बिलाल! किस का दिल करेगा कि वह अल्लाह तआला के रसूल से बदला ले फिर आप ने कहा हे बिलाल हसन और हुसैन से कहो कि कि वह उस आदमी के सामने खड़े हो जाएं कि इन दोनों से बदला ले ले और उस को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बदला न लेने दे।

अत: हज़रत बिलाल मस्जिद में आए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को छड़ी पकड़ा दी और आप ने वह छड़ी उक्काशा को पकड़ा दी। जब हज़रत अबूबकर और उमर ने यह दृश्य देखा तो वे दोनों खड़े हो गए और कहा, हे उक्काशा हम तुम्हारे सामने खड़े हैं हमसे बदला ले लो और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कुछ न कहो। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे कहा, "हे अबू बकर और उमर, दूर रहो।" अल्लाह तआला तुम दोनों के स्थान को जानता है। इसके बाद हज़रत अली खड़े हुए और कहा, हे उक्काशा मैंने अपनी सारी ज़िन्दगी आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ गुज़ारी है और मेरा दिल गवारा नहीं करता कि तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मारो। यह मेरा शरीर है, मुझसे बदला ले लो और निश्चित रूप से मुझे मार डालो लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बदला न लो। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, "हे अली, अल्लाह तआला तुम्हारे इरादे और स्थान को जानता है।" इसके बाद हज़रत हसन और हुसैन खड़े हुए और कहा, हे उक्काशा हम आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नवासे हैं और हम से बदला लेना आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बदला लेने के जैसा ही है। आप ने उन दोनों को फरमाया, "मेरे प्रिय बैठो।" इस के बाद आप ने फरमाया हे उक्काशा मारो। हज़रत उक्काशा ने निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल जब आप ने मुझे मारा था तो उस समय मेरे पेट पर कपड़े नहीं थे। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने पेट पर से कपड़ा उठाया उस पर मुसलमान दीवानों की तरह रोने लग गए और कहने लगे क्या उक्काशा वाकई आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मारेगा। लेकिन जब उक्काशा ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के शरीर की सफेदी देखा, तो दीवानों की तरह लपक कर आगे बढ़ा और आप के शरीर को चूमने लगा और कहने लगा कि किस का दिल स्वीकार कर सकता है कि वह आप से बदला ले इस पर, आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, ,"या बदला लेना या क्षमा करना है।" इस पर उक्काश ने कहा हे अल्लाह के रसूल मैंने माफ किया इस आशा पर कि अल्लाह क़यामत के दिन मुझे माफ कर दे। इस पर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लोगों को सम्बोधित हो कर फरमाया, "हे लोगो जो जन्नत में मेरे साथी को देखना चाहते हैं वे इस बूढ़े आदमी को देखें।" इस पर मुसलमान उठे और हज़रत उक्काशा का माथा चूमने लगे और उन को मुबारकबाद देने लेगे कि तूने बहुत उच्च स्थान और नबीं करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की संगत को पा लिया।

(मजमउज़जवाइद जिल्द 8 पृष्ठ 429 से 431 किताब अलामातुन्नबुव्वत हदूस 14253 प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इमिया बैरूत 2001 ई)

यह थे हज़रत उक्काशा के उन्होंने इस अवसर से लाभ उठा कर कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो अपनी वापसी की ख़बरें सुना रहे हैं और अब पता नहीं कब अवसर मिलता है कि नहीं मिलता। उन्होंने कहा कि यह जीवन में अवसर है कि आप के शरीर को चूम लूं।

हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाह की ख़िलाफत के ज़माना में हज़रत ख़ालिद बिन वलीद के साथ हज़रत उक्काशा मुर्तदों का नाश करने के लिए रवाना हुए। ईसा बिन उमीला अपने पिता से रिवायत करते हैं कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद लोगों के मुकाबला पर रवाना होने से पहले अगर आज़ान सुनते तो हमला न करते अगर अज़ान न सुनते तो हमला कर देते। जब आप रज़ि अल्लाह तआला अन्हो उस क़ौम के मुकाबल पर पहुंचे जो बज़हा के स्थान पर रहती थी तो आप ने हज़रत उक्काश बिन मुहसिन और साबित बिन अकरम को गुप्तचर बना कर भेजा कि शत्रु की ख़बर लाऐं। वे दोनों घोड़े पर सवार थे। हज़रत उक्काशा के घोड़े का नाम अर्रज़ाम था और हज़रत साबित के घोड़े का नाम अलमजर था। उन दोनों का सामना तलेहा और उस के भाई सलमा से हुआ। जो मुसलमानों की जासूसी करने के लिए फौज से आगे आए थे। तलहा का सामना हज़रत उक्काशा से और सलमा का सामना हज़रत साबित से हुए और दोनों भाइयों ने इन दोनों सहाबा को शहीद कर दिया। अबू वाकद लैसी वर्णन करते हैं कि हम दो सौ सवार लशकर के आगे आगे चलने वाले थे। हम इन मकतूलों, हज़रत साबित और हज़रत उक्काशा के पास खड़े रहे यहां तक कि हज़रत ख़ालिद आए और उन के आदेश से हम ने हज़रत उक्काशा और हज़रत साबित के ख़ून से भरे कपड़ों सहित दफन कर दिया।" यह 12 हिजरी की घटना है। इस प्रकार इन की शहादत हुई।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 245 साबित बिन अरकम प्रकाशक दारुल अहया अत्तुरास अलअरबी बैरूत 1996 ई)

हज़रत ख़ारजा बिन ज़ैद आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक सहाबी था। हज़रत ख़रजा बिन ज़ैद का सम्बन्ध ख़ज़रज के ख़ानदान अग़ज़ा से था। हज़रत ख़ारजा की बेटी हज़रत हबीबा ख़ारजा हज़रत अबू बकर सिद्दीक की पत्नी थी। जिन के गर्भ से हज़रत अबू बकर की साहिबज़ादी उम्मे कुलसूम पैदा हुईं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत ख़ारजा बिन ज़ैद और हज़रत अबू बकर के मध्य भाईचारा स्थापित किया था। कबीला के रईस थे और उन की गिनती बड़े सहाबा में की जाती थी। उन्होंने उकबा में बैअत की थी।(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 271 खारजा बिन ज़ैद प्रकाशक दारुल अहया अत्तुरास अलअरबी बैरूत 1996 ई) मदीना हिजरत के बाद हज़रत अबू

बकर सिद्दीक ने हज़रत ख़ारजा बिन ज़ैद के घर में निवास किया। यह जंग बदर में शामिल हुए। हज़रत ख़ारजा जंग उहद में बड़ी बहादुरी से लड़ते हुए शहीद हुए। भालों की चपेट में आ गए थे उन को तेरह से अधिक भाले लगे। आप ज़ख्मों से निढाल पड़े थे कि पास से सफ्फान बिन उमय्या गुज़रा। उस ने उन्हें पहचान कर हमला कर के शहीद कर दिया। फिर उन का मुस्ला भी किया और फिर कहा कि यह उन लोगों में से थे जिन्होंने बदर में अबू अली को कत्ल किया था अर्थात मेरे बाप उमय्या बिन ख़लफ को। अब मुझे अवसर मिला है कि इन असहाबे मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) में से बेहतरीन लोगों को कत्ल करूं और अपना दिल डंठा करूं। उस ने हज़रत इब्ने कौकल, हज़रत ख़ारजा बिन ज़ैद, हज़रत औस बिन अरकम को शहीद किया। हज़रत ख़ारजा बिन ज़ैद और हज़रत सअद बिन रबी जो कि आप के चचेरे भाई थे इन दोनों को एक ही कब्र में दफन किया गया।"

(अल्इस्तेयाब जिल्द 2 पृष्ठ 3-4 ख़ारजा बिन ज़ैद प्रकाशक दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 2002 ई)

रिवायत है कि उहद के दिन हज़रत अब्बास बिन उबादह ऊंची आवाज़ से कह रहे थे हे मुसलमानों के गिरोह अल्लाह और उस के रसूल के जुड़े रहो। जो मुसीबत तुम्हें पहुंची है यह अपने नबी की अवज्ञा के कारण पहुंची है। वह तुम्हें सहायता का वादा देता था परन्तु तुम ने धैर्य धारण न किया। हज़रत अब्बास बिन उबादह ने अपना कवच और ढाल उतार दी और हज़रत खारजा बिन ज़ैद से पूछा कि क्या आप को इन की आवश्यकता है ख़ारजा ने कहा नहीं जिस चीज़ की तुम्हें आवश्यकता है मैं भी वही चाहता हूं। फिर वे सभी दुश्मन पर टूट पड़े। अब्बास बिन उबादह कहते थे कि हमारे देखते हुए अगर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कोई कष्ट पहुंचा कोई तकलीफ पहुंची तो हमारा अपने रब के हुज़ूर क्या बहाना होगा।? और हज़रत ख़ारजा कहते हैं कि अपने रब्ब के सामने न कोई बहाना होगा और न ही कोई दलील। हज़रत अब्बास बिन उबादा को सुफियान बिन अब्दुल शम्स सलमा ने शहीद किया और ख़ारजा बिन ज़ैद को तीरों की वजह से शरीर पर दस से अधिक घाव लगे।

(किताबुल मुग़ाज़ी जिल्द 1 पृष्ठ 227-228 अध्याय गज़वा अहद प्रकाशक दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 2004 ई)

उहद की जंग के दिन, हज़रत मलिक बिन दुहशम, हज़रत ख़ारजा बिन ज़ैद के पास से गुज़रे। हज़रत ख़ारजा घावों से चूर बैठे हुए थे उन्हें तेरह घातक ज़ख्म लगे हुए थे। हज़रत मलिक ने उनसे कहा, "क्या आप नहीं जानते कि मुहम्मद रसूलुल्लह को शहीद कर दिया गया है?" हज़रत ख़ारिजा ने कहा कि यदि आप शहीद हुए हैं तो अल्लाह तआला जिंदा है और वह मरेगा नहीं। मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने संदेश सुना दिया तुम भी अपने धर्म के लिए जंग करो।

(किताबुल मुग़ाज़ी जिल्द 1 पृष्ठ 243 अध्याय गज़वा अहद प्रकाशक दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 2004 ई)

"हज़रत ख़ारजा के दो बच्चे थे, जिनमें से एक हज़रत ज़ैद बिन ख़ारजा थे, जिन्होंने हज़रत उसमान की ख़िलाफत के समय में वफात पाई। हज़रत ख़ारजा बिन ज़ैद की दूसरी औलाद हज़रत हबीबा बिन्त खारजा थीं जिनकी शादी हज़रत अबू बकर सिद्दीकी से हुई थी। हज़रत अबू बकर सिद्दिक की जब मृत्यु हुई तो उन की पत्नि गर्भवती थीं। हज़रत अबू बकर ने फरमाया कि मुझे इन के यहां बेटी के पैदा होने की आशा है अत: इन के यहां बेटी पैदा हुईं। "

(असदुल ग़ाबा जिल्द 1 पृष्ठ 640-641 ख़ारजा बिन ज़ैद प्रकाशन दारुल फिक्र बैरूत 2003 ई)

फिर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक सहाबी हज़रत ज़ैद बिन लबीद थे। उनकी मां का नाम उमरह बिन उबैद मतरूफ था। हज़रत ज़ैद का एक पुत्र अब्दुल्लाह था। उक्बा सानिया में 70 लोगों के साथ हाज़िर हुए और इस्लाम स्वीकार किया। इस्लाम स्वीकार करने के बाद जब मदीना आए तो आते ही उन्होंने अपने कबीला बनू बयाज़ा के बुत तोड़ दिए। जो बुतों की पूजा करते थे। फिर आप आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास मक्का चले गए और वहीं पर रहे यहाँ तक कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीना की तरफ़ हिजरत की तो आप ने भी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ हिजरत की। इसलिए, हज़रत ज़ैद को मुहाजिर अंसारी कहा जाता है। मुहाजिर भी और अंसारी भी थे। हज़रत ज़ैद जंग बद्र, जंग उहद और सभी जंगो में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थे।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 302 ज़ैद बिन लबीद प्रकाशन दारुल अहया अत्तुरास बैरूत 1996 ई)

आं हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हिजरत करके मदीना पहुंचे और कबीला बनो बियाज़ह के मुहल्ला से गुज़रे तो हज़रत ज़्यादा ने अहलन व सहलन कहा और ठहरने के लिए अपना मकान पेश किया तो आं हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मेरी ऊंटनी को स्वतंत्र छोड़ दो यह ख़ुद मंज़िल तलाश कर लेगी।

मुहर्रम नौ हिजरी में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सदक़ा तथा ज़कात वसूल करने के लिए अलग अलग मुहस्सेलीन निर्धारित किए। तो हज़रत ज़याद को हिज़रमौत के क्षेत्र का मुहस्सिल निर्धारित किया। हज़रत उमर के ज़माना तक आप इसी सेवा में रहे। इस सेवा से फारिग़ होने के बाद आप ने कूफा में निवास किया और वहीं 41 हिजरी में वफात पाई।

(सरवरे कायनात के पचास सहाबा तालिब हाशमी पृष्ठ 557-559 प्रकाशन मेट्रो प्रिन्ट्र लाहौर 1985 ई)

तारीख में है कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ि के ज़माना में जब इर्तदाद के फित्ना ने ज़ोर पकड़ा और ज़कात देने से इंकार कर दिया तो अशअत बिन अलकैस अलकुंदी ने भी इर्तदाद धारण किया हज़रत ज़याद को इस को ठीक करने के लिए निर्धारित किया गया जब आप ने इस पर हमला किया तो उस ने किला नहीर में पनाह ले ली। हज़रत ज़याद ने इस का बहुत कठोरता से घेराव किया यहां तक कि वह तंग आ गया और उस ने सन्देश भिजवाया कि मुझे और नौ आदमियों को शान्ति दे दें तो किला का दरवाज़ा खोल दूंगा। इस के बाद उन्होंने किला के दरवाज़ा खोला बाद में जब शान्ति पत्र लिखा गया तो बाकी नौ अदमियों के नाम तो लिखे गए मगर अशअत अपना नाम लिखना भूल गया अत: उसे दूसरे कैदियों के साथ मदीना भेज दिया गया।

(इमताउल असमा जिल्द 14 पृष्ठ 254-255 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1996 ई)

फिर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक अन्य सहाबी थे, हज़रत मुतअब बिन उबैद। आपकी कोई औलाद नहीं थे। आप के भतीजा हज़रत असीर बिन उरवह आप के वारिस हुए। हज़रत मुतअब बिन उबैद जंग बदर और उहद में शामिल हुए और यौमे रजीअ में शहादत पाई।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 240 प्रकाशन दारुल अहया अत्तुरास बैरूत 1996 ई)

रजीअ की घटना में दस मुसलमान शहीद हुए। इस घटना के बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.एम ने भी लिखा है कि ये दिन मुसलमानों के लिए बहुत खतरे के दिन थे और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को चारों ओर से भयावह खबरें आ रही थीं लेकिन सबसे अधिक जोखिम आप को क़ुरैश मक्का के कारण था जो कि उहद के युद्ध के कारण बहुत दिलेर हो गऐ थे। इस खतरे को महसूस करके आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सफर चार हिजरी में अपने दस सहाबियों की एक पार्टी तैयार की और उन पर अहसान बिन साबित को अमीर निर्धारित किया और उन्हें यह आदेश दिया कि गुप्त तरीके से मक्का के पास जाकर कुरैश के स्थिति का पता लगाएं और उनके संचालन और इरादों से आपको सूचित करें लेकिन अभी यह पार्टी रवाना नहीं हुई थी कि कबीला अज़ल और कारह के कुछ लोग आपकी सेवा में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि हमारे कबीला में से कई आदमी इस्लाम स्वीकार करना चाहते हैं आप हमारे साथ कुछ लोग भिजवाएं जो हमें मुस्लिम बनाएं और इस्लाम की शिक्षा दें। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी यह इच्छा जानकर वही पार्टी जो ख़बर लाने के लिए तैयार की गई थी उनके साथ रवाना कर दी लेकिन दरअसल जैसा कि बाद में पता चला कि यह लोग झूठे थे और बनो लिहहान के भड़काने पर मदीना में आए थे जिन्होंने अपने रईस सुफियान बिन ख़ालिद की हत्या का बदला लेने के लिए यह चाल चली थी कि इस बहाने मुसलमान मदीना से निकलेंगे तो उन पर हमला कर दिया जाए और बनो लिहयान ने इस सेवा के

मुआवजे में अज़ल और कारह के लोगों को कई ऊंटों के लिए एक पुरस्कार के रूप में निर्धारित किया था। जब अज़ल और कारह के ये विश्वासघाती लोग असफ़ान और मक्का के बीच पहुंचे तो उन्होंने बनो लियहान को गुप्त रूप से सूचना भिजवा दी कि मुसलमान हमारे साथ आ रहे हैं तुम आ जाओ जिस पर कबीला बनो लिहयान के दो सौ युवा जिनमें से एक सौ धनुर्धारी थे वे मुसलमानों की तलाश में निकल पड़े और रजीअ के स्थान पर (एक जगह है।)उन को आ पकड़ा। दस आदमी दो सौ सैनिकों के साथ कैसे मुकाबला कर सकते थे लेकिन मुस्लिमों को हथियार डालने की शिक्षा नहीं दी गई थी, अगर इस प्रकार कि स्थिती पैदा हो जाए जो तुम्हें घेर लिया जाए तो यही आदेश है कि जंग करो। तुरंत ये सहाबी एक टीले पर चढ़ कर मुकाबला करने के लिए तैय्यार हो गए। कुफ्फार ने जिन के निकट धोखा देना साधारण बात थी इन को आवाज़ देकर कहा कि तुम पहाड़ी से नीचे उतर आओ। हम तुम से पक्का वादा करते हैं कि कत्ल नहीं करेंगे। आसिम रज़ि अल्लाह तआला ने कहा कि हमें तुम्हारे वादा पर कोई भरोसा नहीं हम तुम्हारी इस ज़िम्मेदारी पर नहीं उतर सकते और फिर आसमान की तरफ मुंह उठाकर कहा कि हे ख़ुदा तू हमारी हालत देख रहा है अपने रसूल को हमारी इस अवस्था की सूचना पहुंचा दे। अत: आसिम और उन के साथियों ने मुकाबला किया और लड़ते लड़ते शहीद हो गए। जब सात सहाबा शहीद हो गए और केवल ख़ुबेब बिन अदी और ज़ैद बिन दसना और एक सहाबी बाकी रह गए तो कुफ्फार ने जिन का वास्तिवक उद्देश्य इन्हें ज़िन्दा पकड़ना था फिर आवाज़ देकर कहा कि अब भी नीचे उतर जाओ हम वादा करते हैं कि तुम्हें कोई कष्ट नही पहुंचाएंगे। अब की बारी सीधे साधे मुसलमान उन के फंदे में आ कर नीचे उतर गए। मगर नीचे उतरते ही कुफ्फार ने उन को अपने कमान की डोरियों से जकड़ लिया और बांध दिया इस पर ख़ुबैब और ज़ैद के साथी जिन का नाम तारीख में अबदुल्लाह बिन तारिक वर्णन है धैर्य न हो सका और उन्होंने पुकार कर कहा कि यह तुम्हारी पहली बद अहदी है पता नहीं तुम आगे चल कर क्या करोगे। अब्दुल्लाह ने उन के साठ चलने से इंकार कर दिया। जिस पर कुफ्फार थोड़ी दूर तक अबदुल्लाह के घसीटते हुए मारते हुए ले जाते रहे। और फिर उन्हें कत्ल कर के वहीं फैंक दिया और चूंकि उन का इंतकाम पूरा हो चुका था और कुरैश को ख़ुश करे के लिए और रुपया की लालच में ख़ुबैब और ज़ैद को साथ लेकर मक्का की तरफ रवाना हो गए। और वहां पहुंच कर उन्हें कुरैश के हाथ बेच दिया। अत: ख़ुबैब को तो हारिस बिन आबिर बिन नौफल के लड़कों ने ख़रीद लिया था क्योंकि ख़ुबैब ने जंग बदर में हारिस को कत्ल किया था और ज़ैद को सफवान बिन उमय्या ने ख़रीद लिया था। और यह भी फिर अन्त में शहीद कर दिए गए।

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए पृष्ठ 513-514)

फिर बद्री सहाबा में हज़रत खालिद बिन बुकैर का ज़िक्र है। हज़रत ख़ालिद बिन बुकेर और हज़रत आकिल, हज़रत आमिर , हज़रत अयास ने इकट्ठे दारे अरकम में बैअत की थी। और इन चारों भाइयों ने दारे अर्कम में सब से पहले इस्लाम स्वीकार किया था। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत खालिद बिन बुकेर और हज़रत ज़ैद बन दसना के बीच भाईचारा स्थापित फ़रमाया था। आप जंग बद्र और जंग अहद में मौजूद थे और रजीअ की घटना में जो पहले वर्णन हुई है जहां धोखे से दस मुसलमानों को शहीद किया गया था वहाँ आप भी शहीद हुए।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 297 आकिल बिन अबी अलबकीर, ख़ालिद बिन अलबकीर प्रकाशक दारुल कुतुब अलइल्मिया 1990 ई)

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंग बद्र से पहले एक दल अब्दुल्ला बिन जहश रज़ियल्लाहो अन्हो के नेतृत्व में क़ुरैश के काफिले के लिए रवाना किया था इसमें हज़रत खालिद बिन बकीर शामिल थे। आप सफर 4 हिजरी को 34 साल की उम्र में रजीअ के युद्ध में आसिम बिन साबित और मरसद बिन अबी मरसद ग़नवी के साथ कबीला अज़ल और वकारह के साथ लड़ते हुए शहीद हुए।

(असदुल ग़ाबा जिल्द 1 पृष्ठ 647 खालिद बिन बकीर प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इमिया बैरूत 2003 ई)

इस विषय में इब्ने इसहाक कहते हैं जब कबीला अज़ल और वकारह के लोग इन सहाबा को लेकर रजीअ के स्थान में पहुंचे जो कबीला अज़ील के एक चश्मा का नाम है। हजाज़ के किनारे पर स्थापित है तो उन लोगों ने सहाबा के साथ गद्दारी की यानी जो लोग लेकर गए थे उन्होंने सहाबा के साथ गद्दारी की धोखा दिया और कबीला अज़ील को उनके ख़िलाफ भड़का दिया। सहाबी इस समय अपने तम्बू में ही थे कि उन्होंने देखा कि चारों ओर से लोग तलवारें लिए चले आ रहे हैं यह भी साहसी युद्ध के लिए तैयार हो गए। उन लोगों ने कहा अल्लाह की कसम हम तुम्हें मारेंगे नहीं हम केवल यह चाहते हैं कि तुम्हें पकड़ कर मक्का वालों यानी काफिरों के पास ले जाएं ने यह कहा कि हम तुम्हें कत्ल नहीं करेंगे तुम्हें पकड़ कर मक्का वालों के पास ले जाएंगे और उनसे इस के मुआवजे में कुछ ले लेंगे। हज़रत मरसद बिन अबी मरसद रज़ियल्लाहो अन्हो हज़रत आसिम बिन साबित रज़ियल्लाहो अन्हो और हज़रत ख़ालिद बिन बकीर ने कहा कि ख़ुदा की क़सम हम मुशरिकों के वादा प्रवेश नहीं करेंगे अंत ये तीनों इस कदर लड़े कि शहीद हो गए।"

(सीरत इब्ने हश्शाम पृष्ठ 591-592 वर्णन रजीअ के दिन का प्रकाशक दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 2003 ई)

हज़रत हस्सान बिन साबित ने उन लोगों के बारे में अपने एक शेर में कहा है कि

اَلَا لَیْتَنِی فِیْھَا شَھِدْتُ ابْنَ طَارِقٍ
وَزَیْدًا وَمَا تُغْنِی الْاَمَانِی وَمَرْثَدًا
فَدَافَعْتُ عَنْ حِبِّی خُبَیْبٍ وَعَاصِمٍ
وَکَانَ شِفَاءً لَوْ تَدَارَکْتُ خَالِدًا

(असदुल ग़ाबा जिल्द 1 पृष्ठ 647 खालिद बिन बकीर प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इमिया बैरूत 2003 ई)

अर्थात काश मैं उस (रजीअ की घटना) में इब्ने तारिक और ज़ैद और मरसद के साथ होता यद्यपि इच्छाएं कुछ काम नहीं आतीं तो मैं अपने दोस्त ख़ुबैब और आसिम को बचाता यदि ख़ालिद को पा लेता तो वह भी बच जाता।

तो ये वे थे लोग थे जिन्होंने धर्म की रक्षा करने के लिए कुरबानियां दीं और अल्लाह तआला की ख़ुशी प्राप्त करने वाले बने।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी एक पुस्तक में फरमाते हैं कि

"उस ख़दा तआला का शुक्र जो उपकार करने वाला और ग़मों को दूर करने वाला है और उस के रसूल पर दरूद और सलाम जो इन्सान और जिन के इमाम और पवित्र दिल और जन्नत की तरफ ले जाने वाला है और उस के सहाबा पर सलाम जो ईमान के चश्मा की तरफ प्यासे की तरह दौड़े और गुमराही की अन्धेरी राहों में इलमी और अमली कमाल से प्रकाशित किए गए।"

(नूरुल हक हिस्सा 2 रूहानी ख़ज़ायन भाग 8 पृष्ठ 188)

फिर एक स्थाप पर आप सहाबा के बारे में फरमाते हैं कि

"जो दिन के मैदानों के शेर और रातों के राहिब और धर्म के सितारे हैं। (रातों के राहिब होने का अर्थ है रातों में इबादत करने वाले और धर्म के सितारे हैं।) ख़ुदा की प्रसन्नता उन के साथ है।

(नजमुल हुदा रूहानी ख़ज़ायन भाग 14 पृष्ठ 17)

अल्लाह तआला हमें भी अपनी इल्मी और व्यावहारिक अवस्था को बेहतर करने और रातों की इबादत के स्तर उच्च करने की तौफीक़ प्रदान करे।

जुम्अ: की नमाज़ के बाद एक नमाज़े जनाज़ा गायब पढ़ाऊंगा जो आदरणीय इस्माईल माला गाला साहिब मुबल्लिग़ यूगांडा का है। आप 25 मई को नमाज़े जुम्अ: से पहले दिल के हमला के कारण वफात पा गए। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। वफात के समय इन की उमर 64 साल थी। इस्माईल माल गाला साहिब का जन्म 1954 ई में मकोनो ज़िला यूगेण्डा में हुआ था, उन के माता पिता पिता ईसाई थे। यह ख़ुद भी जन्म जात तौर से ईसाई थे। माला गाला साहिब एक अहमदी दोस्त हाजी शोएब नसीरह साहिब के साले थे इसलिए उन का हाजी शोएब साहिब के घर आना जाना था। हाजी शोएब साहिब के द्वारा ही उन्हें इस्लाम में रुचि पैदा हुई। एक लंबा समय सवाल और जवाब का सिलसिला चलता रहा उसके बाद धीरे धीरे उन पर इस्लाम की सच्चाई प्रकट होना शुरू हुई

और अंत 1978 ई में यह बैअत करके इस्लाम अहमदियत में शामिल हुए जब उन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया तो हाजी शुएब नसीरह साहिब से उल्लेख किया कि मेरी बचपन से यह इच्छा थी कि मैं ईसाई पादरी बनूँ अब चूंकि मैंने इस्लाम स्वीकार कर लिया है तो क्या मैं इस्लाम की सेवा कर सकता हूँ? उन्हें बताया गया था कि आप इस्लाम की सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित कर सकते हैं। उस समय, मुहम्मद अली काहरो साहिब यूगांडा जो इस समय यूगांण्डा के अमीर हैं पाकिस्तान से जामिया की शिक्षा पूरी कर के यूगांण्डा पहुंचे थे। इसलिए उन्होंने 1980 ई में माला गाला साहिब को अन्य पांच ख़ुद्दाम के साथ पाकिस्तान भिजवा दिया। महोदय ने दिसंबर 1980 ई में जामिया अहमदिया रबवा फसल विशेष में प्रवेश किया और एक मार्च 1988 ई को शिक्षा पूरी की। जामिया के समय की शिक्षा के बारे में उस समय जामिया के प्रिंसीपल सैयद मीर महमूद अहमद नासिर साहब ने अपने ज्ञापन में उनके बारे में लिखा कि ज्ञान के आधार से कमज़ोर हैं लेकिन अच्छा सहयोग करने वाले और आज्ञापालन करने वाले छात्र रहे। विनम्र और इबादत करने वाले थे। बुज़ुर्गों से मुलाकात और उन्हें दुआ का कहना उन की आदत थी। महोदय ने बहुत मेहनत के साथ जामिया अहमदिया में अध्ययन किया और 1984 ई में जब हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे को पाकिस्तान से हिजरत करनी पड़ी तब विशेष परिस्थितियों में बड़ा व्याकुल और बहादुरी से यह भी डयूटियाँ देने वालों में शामिल थे। वर्तमान प्रिंसीपल अयाज़ साहिब उनके बारे में लिखते हैं कि हम जामिया में एक साथ रहे। बहुत ही नेक प्रकृति के थे। खामोश आदत के थे। जामिया के उन छात्रों में उन की गिनती होती था जिन्हें इबादत का बहुत शौक था। इताअत करना इन का विशेष गुण था। कहते हैं कि मुझे नकीब और ज़ईम होने के कारण कई बार उन से सम्पर्क रहा। बहुत ही नर्म मिज़ाज और आज्ञा पालन करे वाले थे। फुटबॉल के बहुत प्रशंसक थे। टीम के एकमात्र सदस्य माने जाते थे, जिसे विशेष रूप से शामिल किया जाता था। जामिया की शिक्षा पूरी करने के बाद, 1988 ई में युगांडा में उनकी नियमित नियुक्ति की गई, जहां उन्होंने कई जमाअतों में मुबल्लिग़ के रूप में काम किया। 2007 ई में महोदय दो यूगेण्डा के मुबल्लिग़ों के साथ पाकिस्तान भी गए। जहां उन्हें लोगंडा भाषा में कुरआन के अनुवाद को संशोधित करने की तौफीक़ मिली और तीन महीने के अंदर उन्होंने यह काम पूरा कर लिया। जामिया में तो, शायद ज्ञान में कमज़ोर होंगे, बाद में, ज्ञान के लिहाज़ से भी आगे निकले हुए थे, ज्ञान में उन्होंने बहुत उन्नति की। मरहूम को तब्लीग़ का बहुत शौक था। इन की तब्लीग़ से बड़ी संख्या ने अहमदियत स्वीकार किया। साइकिल पर ही बहुत लम्बे लम्बे तब्लीग़ी सफर किया करते थे। एक बार वह तब्लीग़ के लिए निकले हुए थे कि पीछे से उनकी पत्नी की मृत्यु हो गई। संपर्क करने का कोई माध्यम नहीं था और जब तब्लीग़ से लौटे, तो पता चला कि पत्नी की वफात हो गई है और उसे दफना दिया गया है। पूरा जीवन बहुत नरम और सहानुभूतिपूर्ण बहुत सादगी के साथ सेवा में करते हुए व्यतीत किया। ग़रीबों और दरिद्रों का बहुत ध्यान रखने वाले थे। ख़िलाफत के बुहत वफादारी करने वाले थे। समय के ख़लीफा का हर आदेश मानना आवश्यक समझते थे। अफ्रीकन मुबल्लिग़, विशेष रूप से वाक्फीने ज़िन्दगी में मैं ने देखा है कि ख़िलाफत के साथ उन का विशेष सम्बन्ध है।

अमीर साहिब यूगेंडा मुहम्मद अली काहरो साहिब लिखते हैं कि मरहूम एक आदर्श मुरब्बी थे। निहायत नेक दिल और दावत इलल्लाह करने वाले इंसान थे और बहुत सी मुश्किलों के बावजूद कभी शिक्वा ने किया बल्कि प्रत्येक रूप में धर्म की सेवा में लगे रहे। पहली पत्नी की मृत्यु के बाद उन्होंने दूसरी शादी की और कुछ समय बाद तीसरी शादी भी की। उनकी एक पत्नी लिखती हैं कि मैंने उन्हें सारा जीवन बहुत ही प्यार करने वाला मानवीय और हर हाल में शांत और ख़ुदा का शुक्र अदा करने वाला इंसान पाया। उनकी बेटी का वर्णन है कि हमारे पिता बहुत भावुक और विनम्र थे। हमेशा हमारी ज़रूरतों का ध्यान रखते और धर्म का आज्ञा पालन की शिक्षा देते थे। मरहूम ने अपने पीछे दो पत्नियां और नौ बच्चे छोड़े हैं। अल्लाह तआला उन पर रहम करे उन के साथ क्षमा का व्यवहार करे और उन की नस्लों को भी जमाअत और ख़िलाफत के साथ जोड़े रखे ।

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

शत्रु उन पर दांत पीसता है परंतु ख़ुदा जो उनका मित्र है, प्रत्येक विनाश से उनकी रक्षा करता है, प्रत्येक मैदान में उनको विजय प्रदान करता है। वह मनुष्य बड़ा सौभाग्यशाली है जो उस ख़ुदा का दामन न छोड़े। हमने उसे स्वीकार किया और पहचाना। समस्त संसार का वही ख़ुदा है जिसने मुझे अपनी वाणी से गौरवान्वित किया, मेरे लिए अलौकिक निशान प्रकट किए, जिसने मुझे इस युग के लिए मसीह मौऊद बनाकर भेजा। धरती और आकाश में उसके अतिरिक्त कोई ख़ुदा नहीं। जो मनुष्य उसे स्वीकार नहीं करता और उस पर आस्था नहीं रखता वह सौभाग्य से वंचित और ज़िल्लत से ग्रसित है। हमने ख़ुदा की वाणी को सूर्य की भांति प्रकाशमान पाया। हमने उसे देखा कि संसार का वही ख़ुदा है उसके अतिरिक्त कोई नहीं। जिसे हमने पाया वह समस्त शक्तियों से परिपूर्ण, जीवित रहने वाला और जीवनदाता है। जिसे हमने देखा वह असीम और अनन्त शक्तियों वाला है। सत्य तो यह है कि उसके समक्ष कोई बात भी अनहोनी नहीं सिवाए इसके कि जो उसकी पुस्तक और उसके वायदे के विरुद्ध हो। अत: जब तुम ख़ुदा से प्रार्थना करो तो उन मूर्ख भौतिक वादियों की भांति न करो जो अपने ही विचार से प्रकृति का एक विधान बना बैठे हैं, जिस की ख़ुदा की पुस्तक द्वारा कोई पुष्टि नहीं, क्योंकि वे ख़ुदा से बहुत दूर हैं, उनकी प्रार्थनाएं कदापि स्वीकार न होंगी। वे अंधे हैं न कि सुजाखे, वे मुर्दे हैं न कि जीवित ।

ख़ुदा के समक्ष अपना बनाया हुआ विधान प्रस्तुत करते हैं। और उसकी असीम और अनन्त शक्तियों को सीमित करते हैं, उसे निर्बल समझते हैं। अत: उनसे उनकी विचारधारा के अनुसार ही व्यवहार किया जाएगा। परन्तु हे मनुष्य जब तू प्रार्थना हेतु खड़ा हो तो तुझ पर अनिवार्य है कि तू यह विश्वास रखे कि तेरा ख़ुदा प्रत्येक वस्तु पर पूर्ण अधिकार और शक्ति रखता है तब तेरी प्रार्थना स्वीकार होगी और तू ख़ुदा की अलौकिक शक्तियों के चमत्कार देखेगा, जो हमने देखे हैं। इस संदर्भ में हमारी साक्ष्य ख़ुदा के प्रत्यक्ष दर्शन करने पर आधारित है न कि कपोल कल्पित गाथाओं पर ।

(कश्ती नूह रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 18 से 21)

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**

Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186

Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab

For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

ख़ुत्बः जुमअः

अतः अल्लाह तआला ने फरमाया है कि मैं अधिकार के रूप से उन लोगों को जो तक्वा पर चलते हैं, जो ज़कात देने वाले हैं और अल्लाह तआला के आदेशों पर उन का हक अदा करते हुए और विश्वास के साथ अनुकरण करने वाले हैं, अल्लाह तआला की आयतों पर पूर्ण रूप से ईमान रखने वाले हैं, ज़रूर अपनी रहमत की चादर में लूंगा। अतः मोमिन को अल्लाह तआला के आदेशों पर अनुकरण करने, तक्वा पर चलने और ईमान पर पूर्ण होने की भरपूर कोशिश करनी चाहिए।

जब रमज़ान में इंसान रोज़े के साथ अल्लाह तआला के आदेशों पर पहले से अधिक अनुकरण करे, अपनी इबादतों को बढ़ाए, अपने तक्वा में तरक्की करे फिर इंसान अल्लाह तआला की रहमत की चादर में पहले से बढ़ कर आ गया।
अल्लाह तआला की रहमत को धारण करने का माध्यम तौबा और इस्तिग़फार है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों के हवाला से तौबा तथा इस्तिग़फार का महत्त्व और उस के परिणाम और बरकतों का वर्णन।

अल्लाह तआला की हिफाज़त में आने के लिए, उस की मदद तथा सहायता के लिए, उस का रहम प्राप्त करने के लिए कोशिश इस्तिग़फार और दुआ ज़रूरी है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक बार जमाअत को इस ओर ध्यान दिलाया था कि हमारी जमाअत को यह दुआ बहुत अधिक पढ़नी चाहिए कि رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ (अल्बकरः 202) अतः इस ओर भी हमें ध्यान देना चाहिए ताकि अल्लाह तआला अपनी रहमत में लेकर हमें प्रत्येक प्रकार की सांसारिक तथा आख़िरत की आग से बचाए।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 8 जून 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

وَاكْتُبْ لَنَا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ اِنَّا هُدْنَآ اِلَيْكَ ۚ قَالَ عَذَابِيْٓ اُصِيْبُ بِهٖ مَنْ اَشَآءُ ۚ وَرَحْمَتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ۚ فَسَاَكْتُبُهَا لِلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِنَا يُؤْمِنُوْنَ

(अल्आराफ 157)

इस आयत का अनुवाद यह है। और हमारे लिए इस दुनिया में भलाई लिख दे और परलोक में भी, हम तेरी तरफ तौबा करते हुए आ गए हैं। उसने कहा, "मेरा अज़ाब वह है जिस पर मैं चाहूं उस पर वारिद करता हूं और मेरी रहमत वह है कि जो हर चीज़ पर छाई हुई है। इसलिए मैं उस रहमत को उन लोगों के लिए वाजिब कर दूंगा जो तक्वा धारण करते हैं और ज़कात देते हैं और जो हमारी आयतों पर ईमान लाते है

अल्लाह तआला के अपने बन्दों पर अजीब उपकार हैं क्योंकि यह इस आयत से पता चला है कि अल्लाह तआला कहता है कि मेरी दया सभी चीजों पर हावी है। दया का मतलब है नरम होना, मेहरबान होना, रहम का उभरना अर्थात अल्लाह तआला का बन्दों से नर्मी और नरम व्यवहार करना है जिस की कोई सीमा नहीं। अल्लाह तआला का अपने बन्दों पर मेहरबानी का व्यवहार है जिस की कोई सीमा नहीं है। अल्लाह तआला का यह रहम का व्यवहार और भावना इतनी बढ़ी हुई है कि जो प्रत्येक चीज़ पर छाई हुई है। उस की रहमत में रहमानियत तथा रहीमत दोनों शामिल हैं। यह उस की रहमानियत है कि मांगे बिना भी दुनिया में हज़ारों चीज़ें पैदा की हैं और रहीमयत का फिर वह अल्लाह तआला का हक़ अदा करने वालों, उसकी आज्ञाओं का पालन करने वालों, उसके आगे झुक कर मांगने वालों पर प्रकटन करता है तो यहां अल्लाह तआला फरमाता है कि बन्दों को अज़ाब देना मेरा उद्देश्य नहीं है हां वे लोग मेरे अज़ाब और सज़ा के पात्र बनते हैं जो अपने ग़लत कर्मों के चरम तक पहुंचे हुए हैं परन्तु मेरा यह अज़ाब भी अस्थायी चीज़ है और सुधार तथा इहसास के लिए है। यहां तक कि एक समय आएगा कि जहन्नम वाले भी व्यापक रहमत से भाग लेंगे और उन का अज़ाब भी ख़त्म हो जाएगा। दोज़ख की सज़ा भी उन के ग़लत कामों के कारण से मिलेगी और फिर वह एक सुधार का कारण बन जाएगी। तो अगर देखा जाए तो यह सज़ा भी सुधार है। यह सज़ा का समय भी एक दृष्टि से रहमत है। परन्तु अल्लाह तआला जज़ा तथा सज़ा के दिन का मालिक भी है इसलिए वह ज़ाहिर में गुनाहगार आने वाले लोगों को अपनी रहमत और क्षमा की चादर में लपेट कर बिना सज़ा के भी जाने दे सकता है परन्तु इस ने हमें नेकियों के मार्ग पर चलने की ओर ध्यान दिलाते हुए यह ज़रूर फरमा दिया है कि मेरी रहमत प्रत्येक चीज़ पर छायी हुई है। और उन पर मैं ज़रूर अपनी रहमत करूंगा जो तक्वा धारण करते हैं जो ज़कात देते हैं और उन लोगों पर जो मेरे निशानों पर ईमान लाते हैं। अल्लाह तआला की आयतों पर ईमान लाते हैं।

अतः अल्लाह तआला ने फरमाया है कि मैं अधिकार के रूप से उन लोगों को जो तक्वा पर चलते हैं, जो ज़कात देने वाले हैं और अल्लाह तआला के आदेशों पर उन का हक अदा करते हुए और विश्वास के साथ अनुकरण करने वाले हैं, अल्लाह तआला की आयतों पर पूर्ण रूप से ईमान रखने वाले हैं, ज़रूर अपनी रहमत की चादर में लूंगा।

फिर एक दूसरे स्थान पर अल्लाह तआला फरमाता है कि

اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ (अल्आराफ 57)

कि अल्लाह की रहमत निसन्देह मुहसिनों (उपकार करने वालों) के निकट है। मुहिसन वे हैं जो सारी शर्तों के साथ काम को पूरा करते हैं। अतः जो तक्वा की मांग को पूरा करने वाला है, अल्लाह तआला के आदेशों का पालन करने वाला है, अल्लाह तआला के निशानों पर पूर्ण ईमान रखने वाला है, अल्लाह तआला के आगे झुकने वाला है तो इस प्रकार के आदमी को अल्लाह तआला की रहमत पहुंचेगी। अतः एक आदमी को अल्लाह तआला के आदेशों पर अनुकरण करने, तक्वा पर चलने और ईमान में पूर्ण होने की भरपूर कोशिश करनी चाहिए तभी वह मोमिन कहला सकता है। और अल्लाह तआला के इस फैज़ से बरकत पाने की कोशिश करनी चाहिए कि अल्लाह तआला की रहमत उस के आदेशों पर उन का हक अदा करते हुए अनुकरण करने वालों के निकट है। और अल्लाह तआला ने तो अपने पर फर्ज़ कर लिया है उन के लिए लिख दिया है कि अगर तुम यह करोगे तो मेरी रहमत की व्यापकता तुम्हें अपनी लपेट में ले लेगी। कितना रहीम तथा करीम है

हमारा ख़ुदा। हम तो अल्लाह तआला के बन्दे हैं। बन्दा किस प्रकार अपने मालिक पर कोई हक जता सकता है। परन्तु वह ज़मीन तथा असमान का मालिक कहता है कि अगर तुम तक्वा पर चलोगे मेरे आदेशों पर अनुकरण करते हुए मेरे निशानों पर ईमान लाओगे तो मेरी रहमत के निसन्देह हकदार बन जाओगे। यहां अल्लाह तआला ने पहली चीज़ तक्वा वर्णन फरमाई है और वास्तव में अगर तक्वा की समझ हो जाए तो बाकी नेकियां और ईमान में पूर्ण होना उस के अन्दर ही आ जाता है। इस बारे में एक स्थान पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

"इंसान की सारी रूहानी सुन्दरता तक्वा के सुक्ष्म मार्गों पर कदम मारना है। तक्वा की बारीक राहें रूहानी सुन्दरता के सूक्ष्म नक्श और सुन्दर नक्काशी हैं और स्पष्ट है कि अल्लाह तआला की अमानतों और ईमान के अहदों की यथा सम्भव रिआयत करना(अर्थात उन्हें सहीह तरीका से करना) और सिर से पैर तक जितनी शक्तियां और अंग हैं(इंसान के जितने भी अंग हैं। इंसान की शक्तियां हैं ताकतें हैं।) जिन में ज़ाहरी तौर से आंखें और कान और हाथ और पैर और दूसरे अंग हैं और बातनी रूप से दिल और दूसरी ताकतें और नैतिकता हैं उन को जहां तक ताकत हो ठीक-ठीक यथा उचित प्रयोग करना।(सहीह तरह उन का प्रयोग करना जो अल्लाह तआला के बताए हुए आदेश हैं उन के अनुसार अदा करना उन का हक अदा करना है।)" और नाजायज़ स्थानों से रुकना और उन के छुपे हुए हमलों से सावधान रहना।"(ग़लत प्रयोग से रुकना और शैतान जिन अंगों के माध्यम से छुपे हुए हमले करवाता है इसलिए उस से सावधान रहना यह इंसान का काम है। तभी वह सहीह तक्वा पर चल सकता है। तभी वह अल्लाह तआला के आदेशों की सहीह अदायगी कर सकता है।) फरमाया "और इसी के मुकाबला में अल्लाह के बन्दों के अधिकारों का भी ध्यान रखना यह वह तरीका है कि इंसान की सारी रूहानी सुन्दरता इस से जुड़ी हुई है और ख़ुदा तआला ने कुरआन मजीद में तक्वा को लिबास के नाम से सम्बोधित किया है। अत: लिबासुत्तकवा कुरआन शरीफ का शब्द है। यह इस बात की तरफ इशार है कि रूहानी सुन्दरता और रूहानी ख़ूबसूरती तक्वा से ही पैदा होती है और तक्वा यह है कि इंसान ख़ुदा तआला की सारी अमानतों और ईमान के वादों और इसी तरह सृष्टि की सारी अमानतों और वादों को यथा सम्भव ध्यान रखे। अर्थात उन के सुक्ष्म से सूक्ष्म पहलुओं पर अपने सामर्थ के अनुसार पालन करे।"

(ज़मीमा (परिशिष्ट) बराहीने अहमिदया भाग 5 रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 21 पृष्ठ 209 -210)

इस की जो बारीक से बारीक बातें हैं इस पर भी जिस सीमा तक इंसान की ताकत है जिस सीमा तक सामर्थय है उस की पाबन्दी करे उन पर अनुकरण करे।

अत: इस स्तर को इंसान प्राप्त कर ले तो यह है जहां अल्लाह तआला की रहमत अपने बन्दे पर हक के रूप में फर्ज़ हो जाती है अर्थात अल्लाह तआला ख़ुद अपने ऊपर फर्ज़ कर लेता है। और जैसा कि मैंने कहा कि बन्दे का क्या स्थान है कि अल्लाह तआला से हक के रूप में कुछ ले सके।

ये दिन जिस में से हम गुज़र रहे हैं रमज़ान के दिन हैं। इस का अन्तिम सप्ताह अब रह गया है जिस के बारे में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया था कि जब रमज़ान का महीना आता है तो जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और दोज़ख के दरवाज़े बन्द कर दिए जाते हैं और शैतान को जकड़ दिया जाता है।

(सहीह मुस्लिम किताबुस्सयाम हदीस 2495)

इस से भी मोमिन लाभ उठाते हैं। वह लाभ उठाएगा जो सहीह तरीका से ईमान लाने वाला है अल्लाह तआला के आदेशों पर अनुकरण करने वाला है। शैतान के चेले तो इन दिनों में भी अपनी हरकतें करने से नहीं रुकते। दुनिया में अत्याधिक निर्लज्जता बेशर्मी दैनिक काम बन गया है। रमज़ान में कोई समाप्त हो गई हैं। अत: यह ख़ुशख़बरी मोमिनों के लिए है और यह तक्वा पर चलने वालों के लिए है। अल्लाह तआला की रहमत से हिस्सा पाने वालों के लिए है कि तुम्हारे लिए अल्लाह तआला ने अपनी रहमत पहले से भी अधिक कर दी है। अत: इस से लाभ उठाओ और अल्लाह तआला के हक अदा करने की कोशिश करो। इस हक को अदा करने की तरफ ध्यान दिलाते हुए एक अवसर पर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो आदमी ईमान के तकाज़े और सवाब की निय्यत से उठ कर रमज़ान की रातों में नमाज़ पढ़ता है उस के पिछले गुनाह माफ कर दिए जाते हैं। सब पुराने गुनाह माफ कर दिए जाते हैं।

(सहीह बुख़ारी किताबुल ईमान हदीस 38)

अल्लाह तआला की रहमत की व्यापकता का एक दूसरा नज़ारा कि तुम एक कोशिश करते हो तो मैं कई गुना बढ़ा कर तुम्हें देता हूं। किस किस तरह से उस की रहमानियत रहीमियत और रहम का प्रकटन हो रहा है। अत: ख़ुश किस्मत हैं वे जो इन दिनों से लाभ उठाने वाले हैं। फिर यह भी इस की रहमत है कि इन अन्तिम दिनों नें लैयलतुल कद्र की तलाश की तरफ हमारा ध्यान दिलाया ताकि हम दुआ की कूबुलियत के पहले से बढ़ कर नज़ारे देखें। यह भी कोई हमारा हक तो नहीं। यह भी उस का रहम है ताकि बन्दो को अल्लाह तआला के निकच करने की तरफ ध्यान दिलाए और यह भी उस की रहमत की व्यापकता है।

फिर एक हदीस में है कि रमज़ान के पहले दस दिन रहमत हैं और मध्य के दस दिन क्षमा हैं और उस के अन्तिम दस दिन आग से मुक्ति है।

(कन्ज़ुल उम्माल जिल्द 8 पृष्ठ 463 हदीस 23668 प्रकाशक मूअस्सस अर्रिसाला बैरूत 1985 ई)

जब रमज़ान में इंसान रोज़े के साथ अल्लाह तआला के आदेशों पर पहले से अधिक अनुकरण करे, अपनी इबादतों को बढ़ाए अपने तक्वा में तरक्की करे तो फिर इंसान अल्लाह तआला की रहमत की चादर में पहले से बढ़ कर आ गया। क्योंकि अल्लाह तआला फरमाता है कि जब बन्दा मेरे लिए रोज़ा रखता है। इन दिनों में मेरे लि कुछ जायज़ बातों को करने से भी रुकता है तो फिर इस प्रकार का रोज़ा रखने वाले का बदला में ख़ुद बन जाता हूं।

(सहीह बुख़ारी किताबुस्सौम हदीस 1904)

जब अल्लाह तआला ख़ुद बदला बन गया तो क्षमा के सामान पैदा हो गए। और जब क्षमा के सामान पैदा हो गए और अल्लाह तआला ने क्षमा और माफ करना और तौबा स्वीकार कर ली तो फिर आग से इंसान की नजात हो गई। आग से बच गया। इस दुनिया की आग और आख़रत, अगली दुनिया की आग से भी। मगर शर्त यही है कि विशेष रूप से अल्लाह तआला के लिए रोज़ा रखना है और करम करने हैं और कर्म स्थायी ज़िन्दगी का हिस्सा बन कर अल्लाह तआला की रहमत में स्थायी लपेटे रहने का माध्यम बन जाते हैं।

अल्लाह की रहमत केवल रमज़ान के पहले दस दिनों के लिए नहीं है। पहले से दूसरे दस दिनों में भी दाख़िल हो रही है और तीसरे दस दिनों में भी दाख़िल हो रही है और स्थायी इंसान के साथ है जब तक उस के कर्म तक्वा पर चलते हुए ईमान में मज़बूती के साथ किए जाते रहेंगे। इसी तरह उस की क्षमा मध्य के दस दिनों के लिए नहीं है बल्कि रमज़ान के अन्तिम दस दिनों के अन्त तक और इस से भी आगे इंसान के साथ है और जब तक इंसान की ज़िन्दगी है उस के साथ है और अल्लाह तआला की सज़ा से बचाने वाली है। इसी तरह आग से भी इंसान इन दस दिनों में नहीं बच रहा बल्कि अल्लाह तआला की रहमत से लाभ उठाते हुए और अल्लाह तआला से क्षमा मांगते हुए जो रमज़ान भी गुज़र जाएगा तो वह उस के बाद भी आग से दूर रहेगा। वरना अगर रमज़ान के हबाद फिर वही दुनियादारी के छा जाने और तक्वा से दूरी और अल्लाह के आदेशों से अवहेलना और ईमान की कमज़ोरी और अल्लाह तआला के निशानों की हम ने परवाह नहीं करनी है तो फिर इसी प्रकार है जैसे अपने लिए इंसान एक मज़बूत किला बनाता है एक सुरिक्षत मोर्चा बनाता है और फिर ख़ुद ही उस को नष्ट कर दे और तोड़ दे। अत: यह रमज़ान तो अल्लाह तआला की रहमत से हिस्सा लेने के लिए पहले से बढ़ कर हिस्सा लेने के लिए अल्लाह तआला ने एक माध्यम बनाया है। अल्लाह तआला की निकटता प्राप्त करने का एक माध्यम बनाया है. वरना न ही अल्लाह तआला की रहमत कुछ दिनों तक सीमित है न ही उस की क्षमा कुछ दिनों तक सीमित है न ही उस की क्षमा की कुबूलियत के कारण से आग से नजात कुछ दिनों के लिए या कुछ समय के लिए है।

अत: इस बात पर हमेशा ध्यान देते रहना चाहिए। इस युग में कदम कदम पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमारा मार्ग दर्शन फरमाया है कि किस प्रकार हम अल्लाह तआला की निकटता प्राप्त कर सकते हैं और उस की वास्तविकता क्या है किस प्रकार हम अल्लाह तआला की रहमत से हिस्सा लेने वाले बन सकते हैं और किस प्रकार अल्लाह तआला हमें अपनी रहमत में लपेटने के समान करता है या हमारे एक कर्म को किस प्रकार बढ़ा कर नवाज़ता है। किस प्रकार क्षमा के सामान करता है और किस प्रकार हमें क्षमा के लिए कोशिश करनी चाहिए ताकि इस की रहमत स्थायी हमारे साथ रहे। इस के लिए मैं आप के कुछ उद्धरण प्रस्तुत करता हूं। और व्याख्या भी करूंगा।

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस आयत की व्याख्या करते हुए

जो मैंने तिलावत की है फरमाते हैं कि अल्लाह तआला फरमाता है कि मैं जिस का चाहता हूं आज़ाब देता हूं और मेरी रहमत ने प्रत्येक चीज़ को घेर रखा है। अत: मैं उन के लिए जो प्रत्येक तरह के शिर्क और कुफ्र और बेहियाइयों से परहेज़ करते हैं और ज़कात देते हैं और इसी प्रकार उन के लिए जो हमारी निशानियों पर पूर्ण ईमान लाते हैं अपनी रहमत लिखूंगा।"

(बराहीने अहमिदया भाग 4 रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 1 पृष्ठ 564)

यहां आप ने तक्वा को तीन शब्दों में स्पष्ट फरमाया है कि शिर्क से परहेज़ करना, कुफ्र से नजात, बेहियाइयों से परहेज़ करना। आज कल कदम कदम पर बेहियाइयों के सामान हैं। टी वी पर इन्ट्रनेट पर और माडिया में गन्दगी और व्यर्थ कामों के सामान हैं। अत: जो भी व्यर्थ और बेकार प्रोग्राम हैं उन से बचना भी अल्लाह तआला की रहमत को खींचने का कारण बनते हैं। रमज़ान में इन दिनों में रोज़े रखने के लिए जल्दी भी उठना पड़ता है और रात को दूसरी व्यस्तता भी हैं इस लिए बहुत से लोग हैं जो शायद इन दिनों में इन चीज़ों को इतना नहीं देखते या इन व्यर्थ कामों में नहीं पड़े हुए या इस से बच रहे हैं। इस से स्थायी बचना ज़रूरी है। यह चीज़ें आजकल विशेष रूप से नौजवानों को बल्कि प्राय शिकायतें आती हैं कि बड़ों को, उन के दिमाग़ों को ज़हर से भर रही हैं। चरित्र ख़राब हो रहे हैं। अत: हर अहमदी को इस तरफ ध्यान देते हुए भरपूर कोशिश करनी चाहिए और इन चीज़ों को भी सहीह उचित और ध्यान पूर्वक प्रयोग करना चाहिए।

फिर एक स्थान पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

" इस आयत से पत चलता है कि रहमत आम तथा व्यापक है और क्रोध अर्थात इंसाफ जो किसी विशेषता के बाद पैदा होता है अर्थात यह गुण अल्लाह तआला के कानून से सीमा से निकलने के बाद अपना हद पैदा करती है।

(जंगे मुकद्दस रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 6 पृष्ठ 207)

अत: जब अल्लाह तआला किसी को सज़ा देता है तो वह अल्लाह तआला के कानून से बाहर निकलता है और जैसा कि वर्णन हो चुका है कि यह सज़ा भी सुधार के लिए होती है और फिर अल्लाह तआला की रहमत विजयी प्राप्त करती है। बहरहाल स्पष्ट हो कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने फरमाया है कि अगर किसी पर अल्लाह तआला की ग़ज़ब अवतरित होता है तो इस कारण से कि उस ने अल्लाह तआला के कानून से बाहर निकलने की सीमा कर दी। फिर इस के बावजूद अल्लाह तआला ने अपनी रहमत को व्यापक किया हुआ है फिर भी वह उस के क्रोध की पकड़ में आ जाते हैं।

इस के और अधिक स्पष्ट करते हुए एक स्थान पर आप फरमाते हैं कि " वईद(सख्ती) में वास्तव में कोई वादा नहीं होता। केवल इतना होता है कि ख़ुदा तआला अपनी कुद्दूसियत के कारण चाहता है कि मुजरिम आदमी को सज़ा दे।..... फिर जो मुजरिम आदमी तौबा क्षमा और रोने से अपने रोना का हक पूरा कर देता है तो अल्लाह की रहमत का तकाज़ा क्रोध के तकाज़ा पर प्राथमिकता ले जाता है। और इस क्रोध को अपने अन्दर छुपा लेता है। यही अर्थ इस आयत के हैं कि

عَذَابِيْٓ اُصِيْبُ بِهٖ مَنْ اَشَآءُ ۚ وَرَحْمَتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ (अल्आराफ 157)

अर्थात رَحْمَتِيْ سَبَقَتْ غَضَبِيْ

(तोहफा ग़ज़नविया रूहानी ख़ज़ायन भाग 15 पृष्ठ 537)

अर्थात मेरी रहमत मेरे क्रोध पर प्राथमिकता ले गई। जब इंसान तौबा कर रहा है। इस्तिग़फार कर रहा है, विनय कर रहा है, दुआएं मांग रहा है और जब उस की यह मांग पूरी कर देता है जो उस का हक है पूरा कर देता है तो फिर आप ने फरमाया फिर अल्लाह तआला ने अपने ऊपर सज़ा देना फर्ज़ करार नहीं दिया। बल्कि उस ने जो फर्ज़ किया है तो वे इस प्रकार के लोगों पर रहमत फर्ज़ की है। फिर उस की रहमत जो है उस के क्रोध के तकाज़ा पर विजय पाती है। और क्रोध जो है वह ग़ायब हो जाता है और पर्दों में छुप जाता है।

फिर आप फरमाते हैं कि अल्लाह की रहमत को धारण करने का माध्यम तौबा और इस्तिग़फार है। और इस्तिग़फार की वास्तविकता क्या है। इस के अर्थ क्या है। इस बारे में आप फरमाते हैं कि

"इस्तिग़फार के वास्तविक और मूल अर्थ ये हैं कि ख़ुदा से विनती करना कि मनुष्य होने की कोई कमज़ोरी प्रकट न हो और ख़ुदा प्रकृति (फ़ितरत) को अपनी शक्ति का सहारा दे और अपने समर्थन और सहायता के घेरे के अन्दर ले ले।" (इस्तिग़फार किस लिए है कि इंसान कमज़ोर है तो कोई कमज़ारी जो इंसान के अन्दर है वह प्रकट न हो। ग़लतियां होने से बचाए। फरमाया कि) "यह शब्द غَفَرَ से लिया गया है जो ढांकने को कहते हैं। तो इसके ये अर्थ हैं कि ख़ुदा अपनी शक्ति के साथ क्षमायाचक व्यक्ति की कमज़ोरी को ढांक ले।"(अर्थात जो इस्तिग़फार करने वाला आदमी है उस की जो फिरतरी कमज़ोरी है इंसान की फितरत में बहुत कमज़ोरियां होती हैं, उन को ढांक ले । वे प्रकट न हों। और इन कमज़ोरियों के कारण उस से गुनाह प्रकट हों।) "परन्तु इसके बाद सामान्य लोगों के लिए इस शब्द के अर्थ और भी विशाल किए गए और यह भी अभिप्राय लिया गया कि ख़ुदा गुनाह (पाप) को जो हो चुका है ढांक ले।" (अर्थात जो इंसान गुनाह कर चुका है उसको भी ढांक ले। उस के बुरे प्रभाव से बचाए। उस के कारण जो सज़ा मिलनी है उस से बचाए।) "किन्तु असल और वास्तविक अर्थ यही हैं कि ख़ुदा अपनी ख़ुदाई की शक्ति के साथ क्षमायाचक को जो पाप की क्षमायाचना करता है स्वाभाविक कमज़ोरी से बचाए और अपनी शक्ति से शक्ति प्रदान करे तथा अपने ज्ञान से ज्ञान प्रदान करे और अपने प्रकाश से प्रकाश दे, क्योंकि ख़ुदा मनुष्य को पैदा करके उस से अलग नहीं हुआ, बल्कि वह जैसा कि मनुष्य का स्रष्टा है और उसकी सम्पूर्ण एवं बाह्य शक्तियों का पैदा करने वाला है वैसा ही वह मनुष्य का क़ायम रखने वाला भी है। अर्थात् जो कुछ बनाया है उसे अपने विशेष सहारे से सुरक्षित रखने वाला है। तो जब कि ख़ुदा का नाम क़य्यूम (क़ायम रखने वाला) भी है अर्थात् अपने सहारे से सृष्टि को क़ायम रखने वाला। इसलिए मनुष्य के लिए अनिवार्य है कि जैसा कि वह ख़ुदा के सृजन करने के गुण से पैदा हुआ है ऐसा ही वह अपनी पैदायश के नक़्श को ख़ुदा की क़य्यूमियत (कायम रखने) के द्वारा बिगड़ने से बचाए,

(असमते अंबिया रूहानी ख़ज़ायन भाग 18 पृष्ठ 671)

अल्लाह तआला ने इंसान को पैदा करके छोड़ नहीं दिया। वह कय्यूम भी है। इसलिए इंसान की जो पैदायश है वह कुदरत के कानून के अधीन है। निसन्देह इंसान को अल्लाह तआला ने पैदा किया है, पैदायश उसी के आदेश है होती है परन्तु कुदरत के कानून के अधीन इंसानी कोशिश और माध्यम और जो कानून अल्लाह तआला ने पैदा किया है उस से गुज़रना पड़ता है। यह आवश्यक है। अत: फरमाया कि पैदायश में इंसान की जो कोशिश होती है उस के बाद अल्लाह तआला परिणाम पैदा करता है। इसलिए यह भी आवश्यक है कि अल्लाह तआला के आदेशों पर चलने के लिए, उस पर अनुकरण करने के लिए उस का जो गुण कय्यूमियत है इस का भी तुम्हारे से प्रकटन होना चाहिए। उस को प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए और उस के आदेशों पर चलने के लिए उस से दुआ और इस्तिग़फार की तरफ ध्यान रहना चाहिए ताकि अल्लाह तआला इस गुण कय्यूमियत का प्रयोग करते हुए फिर वह शक्ति प्रदान करे जिस से इंसान के आदेशों पर चलने वाला बना रहे।

फिर और अधिक स्पष्टीकरण करते हुए आप फरमाते हैं कि

" अत: मनुष्य के लिए यह एक स्वाभाविक आवश्यकता थी जिस के लिए इस्तिग़फ़ार का निर्देश है। इसी की ओर पवित्र क़ुर्आन का निर्देश है। इसी की ओर पवित्र क़ुर्आन में यह संकेत किया गया है कि

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ (अलबक़रह – 256)

.....अत: वह ख़ुदा स्रष्टा भी है और क़य्यूम भी। फिर जब मनुष्य पैदा हो गया तो स्रष्टा होने का काम तो पूरा हो गया परन्तु कय्यूमियत का काम हमेशा के लिए है।"(इंसान पैदा हो गया तो स्रष्टा का काम जो अल्लाह तआला का गुण है वह पूरा हो गया परन्तु कय्यूमियत का काम जब तक इंसान की ज़िन्दगी है उस समय तक उस के साथ है।) "इसीलिए हमेशा के इस्तिग़फार की आवश्यकता पड़ी।"(हमेशा इस कय्यूमित के गुण को प्राप्त करने के लिए स्थायी इस्तिग़फार करने ज़रूरत है।) "तो ख़ुदा की प्रत्येक विशेषता के लिए एक फैज़ है तो इस्तिग़फार क़य्यूमियत की विशेषता का लाभ प्राप्त करने के लिए"(है) (अल्लाह तआला के गुण कय्यूमियत से लाभ उठाना है तो इस्तिग़फार करो ताकि अल्लाह तआला ने इंसान को जो शक्तियां दी हैं, जो ताकतें दी हैं उन को अल्लाह तआला अपनी इच्छा के अनुसार चलाने की तौफीक प्रदान फरमाए।) फरमाया कि इसी तरफ " इशार सूरह फ़ातिहा की इस आयत में है –

اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝ (अलफ़ातिहा – 3)

अर्थात् हम तेरी ही इबादत (उपासना) करते हैं और तुझ से ही इस बात की सहायता चाहते हैं कि तेरी क़य्यूमियत और रबूबियत (प्रतिपालन) हमें सहायता दे और हमें ठोकर से बचाए ताकि ऐसा न हो कि कमज़ोरी प्रकट हो जाए और हम इबादत न कर सकें।"

(असमते अंबिया रूहानी ख़ज़ायन भाग 18 पृष्ठ 672)

अत: यह वह केन्द्रीय बिन्दु है जो हर समय सामने रखना चाहिए। केवल यह कहना कि अल्लाह तआला कहता है कि प्रत्येक चीज़ को घेरे हुए है। इसलिए जो चाहे कर लो। बाद में अल्लाह तआला से रहमत और क्षमा मांग लेना। यह उचित नहीं है। अल्लाह तआला ने रहमत उन के लिए फर्ज़ की है जो उस की तरफ आते हैं। उस के आदेशों के पाबन्द हैं। उस से क्षमा मांगते हैं।

फिर इस्तिग़फार से विषय को और अधिक वर्णन करते हुए आप फरमाते हैं कि

" कुछ आदमी इस प्रकार होते हैं कि उन को गुनाह की ख़बर होती है। और कुछ इस प्रकार के उन को गुनाह की ख़बर भी नहीं होती"(गुनाह कर लिया, पता ही नहीं चला, अज्ञान हो चुके हैं। या ग़लती से गुनाह हो जाता है। पता नहीं लगता कि गुनाह क्या है।)"इसीलिए अल्लाह तआला ने हमेशा के लिए इस्तिग़फार अनिवार्य कराया है कि इंसान प्रत्येक गुनाह के लिए चाहे वह ज़ाहिर का हो चाहे छुपा हुआ हो चाहे ज्ञान हो या न हो और हाथ और पांव और ज़बान और नाक और कान और आंख और सब प्रकार के गुनाहों से इस्तिग़फार करता रहे।(शरीर के जितने भी अंग हैं किसी से भी इस प्रकार का गुनाह न हो। इस्तिग़फार करते रहो। फरमाया कि) आज कल आदम अलैहिस्सलाम की दुआ बहुत पढ़नी चाहिए

رَبَّنَا ظَلَمْنَا اَنْفُسَنَا وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ

(सूरह अलआराफ 24) यह दुआ पहले ही स्वीकार हो चुकी है अल्लाह तआला ने अपने नफ्स पर जुल्म किया अगर तूने हमें न क्षमा किया हम पर रहम न किया तो फिर हम घाटा उठाने वालों में से हो जाऐंगे? आप ने फरमाया कि यह दुआ पहले ही स्वीकार हो चुकी है) अज्ञानता से ज़िन्दगी न गुज़ारो। जो आदमी अज्ञानता से जीवन नहीं गुज़ारता हरगिज़ आशा नहीं कि वह किसी ताकत से बढ़ कर बला में गिरफ्तार हो कोई बला बिना आज्ञा के नहीं आती। फरमाया कि जैसे मुझे यह दुआ इल्हाम हुई है۔ رَبِّ كُلُّ شَيْءٍ خَادِمُكَ رَبِّ فَاحْفَظْنِيْ وَانْصُرْنِيْ وَارْحَمْنِيْ

(मल्फूज़ात भाग 4 पृष्ठ 275-276 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

अत: अल्लाह तआला की सुरक्षा में आने के लिए उस की सहायता प्राप्त करने के लिए उस का रहम प्राप्त करने के लिए कोशिश, इस्तिग़फार और दुआ ज़रूरी है।

इस्तिग़फार और पश्चाताप हम दो शब्द प्रयोग करते हैं। इस के अंतर को स्पष्ट करते हुए आप फरमाते हैं कि

"इस्तिग़फार और पश्चाताप दो बातें हैं। एक कारण से इस्तिग़फार को पश्चाताप पर प्राथमिकता है" (यानी इसे प्राथमिकता है क्योंकि वह पहले है पश्चाताप से पहले इस्तिग़फार है) "क्योंकि इस्तिग़फार सहायता और शक्ति है जो अल्लाह तआला से प्राप्त की जाती है।" (पापों से बचने में मदद, इस्तिग़फार के माध्यम से अल्लाह तआला से सहायता तथा शक्ति प्राप्त की जाती है। ताकि इंसान गुनाहों से बच जाए) "और तौबा अपने पैरों पर खड़ा होना है" (अर्थात बचने के बाद,फिर दृढ़ता से इस पर कायम रहना। अपने गुनाहों से बचने के लिए जो इस्तिग़फार है अल्लाह तआला से दुआ मांगी है उस पर स्थापित रहने के लिए तौब: है। तो दुआ यह है तौबा इस लिए है कि हे अल्लाह जो क्षमा की दुआ हम ने चाही है हमें इस पर स्थापित रख। आग से नजात दे तो यह स्थायी नजात हो हमारा कोई भी कर्म या जो भी इस में कोशिशें हम ने की हैं ये सारी तुझे नाराज़ करने वाली न बन जाएं कि हम फिर वापस उसी स्थान पर आ जाएं। इस लिए तौबा है। अर्थात गुनाहों से माफी मांगने के लिए तौबा है وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ कहा तो इसलिए कि हमें अब इस पर स्थापित भी रख। कि हम अपने गुनाहों से बचें तेरी क्षमा को हमेशा प्राप्त करने वाले रहें और आग से हमेंशा हमें नजात मिलती रहे) फरमाया कि " अल्लाह तआला की आदत यही है कि जब अल्लाह तआला से सहायता चाहेगा तो अल्लाह तआला एक शक्ति देगा फिर इस शक्ति के बाद इंसान अपने पांव पर खड़ा हो जाएगा। और नेकियों के करने के लिए इस में एक ताकत पैदा हो जाएगी। और जिस का नाम وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ है " फरमाया कि " तौबा की शक्ति इस्तिग़फार के बाद मिलती है अगर इस्तिग़फार न हो तो याद रखो कि तौबा की ताकत मर जाती है। फिर इस तरह से इस्तिग़फार करोगे तो परिणाम यह होगा कि يُمَتِّعْكُمْ مَتَاعًا حَسَنًا اِلٰى اَجَلٍ مُّسَمًّى (कि तुम्हें एक निर्दिष्ट समय के लिए अल्लाह तआला बेहतरीन सामान प्रदान करेगा।) फरमाया कि "अल्लाह तआला की सुन्नत इसी प्रकार जारी है अगर इस्तिग़फार करोगे तो अपने स्तर को पा लोगे। प्रत्येक हिस के लिए एक सीमा है जिस में वह तरक्की के स्तर को प्राप्त करता है। प्रत्येक आदमी नबी रसूल, सिद्दीक, शहीद नहीं हो सकता।"

(मल्फूज़ात भाग 2 पृष्ठ 68-69 प्रकाशन 1985 ई यू के)

परन्तु जो भी किसी के लिए स्तर निर्धारित किए गए हैं जिस जिस सीमा तक किसी ने पहुंचना है उस को प्राप्त करने के लिए कोशिश करनी पड़ेगी और इस्तिग़फार और तौबा: के माध्यम से होगी।

फिर तौबा को स्पष्ट करते हुए आप फरमाते हैं

" स्पष्ट हो कि तौबा अरबी भाषा के कोश में लौटने को कहते हैं। इसी कारण से कुरान मजीद में अल्लाह तआला का नाम भी तव्वाब है अर्थात बहुत लौटने वाला। इस के अर्थ यह हैं कि जब इंसान गुनाहों से दूर होकर सच्चे दिल से ख़ुदा तआला की तरफ लौटता है तो ख़ुदा तआला उस से बढ़ कर उस की तरफ लौटता है। यह बात ख़ुदा तआला की कानून कुदरत के अनुसार है। क्योंकि जब अल्लाह तआला ने मानव जाति में यह बात रखी है कि जब एक आदमी सच्चे दिल के सात दूसरे की तरफ लौटता है तो उस का दिल भी उस के लिए नर्म हो जाता है। तो फिर अक्ल क्योंकर इस बात को स्वीकार कर सकती है कि बन्दा तो सच्चे दिल के साथ अल्लाह तआला की तरफ लौटे मगर ख़ुदा उस की तरफ न लौटे। बल्कि ख़ुदा की हस्ती बहुत दयालु तथा कृपालु है वह बन्दा से बहुत अधिक उस की तरफ लौटता है इसलिए कुरआन शरीफ में अल्लाह तआला का नाम..... तव्वाब है। अर्थात बहुत अधिक लौटने वाला अत: बन्दे का लौटना तो शर्मिन्दगी लज्जा और विनय के साथ होता है और ख़ुदा तआला का लौटना रहमत और क्षमा के साथ। अगर रहमत ख़ुदा तआला के गुणों में से न हो तो कोई मुक्ति नहीं पा सकता। " फरमाया कि " अफसोस के उन लोगों ने ख़ुदा तआला के गुणों पर विचार नहीं किया और सारा भरोसा अपने कर्म पर रखा।"(जो समझते हैं कि हम ने अपने कर्म से ही सब कुछ प्राप्त कर लेना है।)" परन्तु वह ख़ुदा जिस ने बिना किसी कर्म के हज़ारों चीज़ें इंसान के लिए संसार में पैदा कीं। क्या इस की यह आदत हो सकती है कि कमज़ोर इंसान जब अपनी अज्ञानता से सचेत होकर उस की तरफ लौटे और इस प्रकार लौटे कि मानो मर जाए और पहला गन्दा चोला अपने शरीर से उतार दे और उस की मुहब्बत की आग में जल जाए तो फिर भी ख़ुदा उस की तरफ रहमत के साथ ध्यान न दे क्या इस का नाम ख़ुदा की कानूने कुदरत है।?"

(चश्मा मअरफत रूहानी ख़ाज़ायन भाग 23 पृष्ठ 133-134)

यह उन लोगों को उत्तर दो रहे हैं जो कहते हैं कि ख़ुदा तआला रहमत करते हुए लौटता नहीं है। बेशक इंसान दुआ करते हुए, इस्तिग़फार करते समय अपनी अवस्था को मुर्दा बना ले, मानो के वह मर गया है और अपना जो पहला अपवित्र चोला है, लिबास है शरीर से उतार दे। अपने आप को पवित्र कर ले। अल्लाह तआला की मुहब्बत की आग में जलने लग जाए जब भी अल्लाह तआला रहम से नहीं लौटेगा।? यह उन लोगों को दृष्टि कोण हो सकता है फरमाया कि इस प्रकार के लोग झूठ बोलते हैं लअनतुल्लाह अल्ल काज़ेबीन। आप ने फरमाया कि यह हरगिज़ नहीं हो सकता कि बन्दा तो अपना हक अदा करे और ख़ुदा तआला कुछ न अता करे। यह अल्लाह तआला के स्थान के ही विरुद्ध है अल्लाह तआला की इस घोषणा के विरुद्ध है कि मेरी रहमत बहुत व्यापक है। यह उस के कानून के विरुद्ध है जैसा कि मैंने कहा कि उस की व्यापक रहमत के विरुद्ध है परन्तु इंसान ने जो फर्ज़ पूरा करना है वह भी यह है कि इस प्रकार कोशिश करे कि मानो मर जाए और पहला अपवित्र लिबास जो है, इंसान का गुनाहों को लिबास उस को अपने शरीर से उतार दे और उस की मुहब्बत की आग में जल जाए। आप ने फरमाया ये चीज़ें होंगी और ये बहुत ध्यान देने योग्य हैं तो फिर अल्लाह तआला भी इस प्रकार लौटेगा कि इंसान इस बारे में सोच भी नहीं सकता।

तो, यह है वह क्षमा मांगने की गुणवत्ता जो अल्लाह तआला की दया का बन्दे को हकदार बना देती है, वह अधिकार जिस की अदायगी ख़ुदा अल्लाह तआला

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

ने स्वयं के लिए फर्ज़ कर ली है। आपने सच्ची और वास्तविक तौबा की शर्तें भी वर्णन की हैं कि यह प्राप्त करने के लिए इंसान को क्या और किस प्रकार कोशिश करनी चाहिए।

आपने कहा कि सच्चे पश्चाताप के लिए तीन शर्तें हैं। पहली बात यह है कि अपने दिमाग़ को इन सारी बातों से पाक करो जिन से नापाक विचार पैदा होते हैं और यह उस समय तक नहीं हो सकता जब तक इन बुराइयों की भयावह और भयानक शक्ल अपने दिमाग़ में न पैदा करोगे। अगर इन की तरफ ध्यान रहेगा अगर इ के विरुद्ध दिमाग़ में एक गन्दी शक्ल नहीं बनाओगे तो फिर इन से बचना कठिन है। पहली चीज़ तो यही है कि इन को अपने दिमाग़ से निकालना पड़ेगा। कोशिश कर के इन चीज़ें से नफरत की भावना पैदा करनी पड़ेगी। दूसरी बात यह कि कोई भी ग़लत काम करने या बुराई की तरफ ध्यान जाने पर लज्जा होनी चाहिए। इंसान के दिमाग़ में जब विचार आए तो शीघ्र लज्जा का विचार आना चाहिए। यह विचार दिल में आना चाहिए कि यह बुराइयां और आनन्द जिन की तरफ मैं जा रहा हूं यह अस्थायी हैं और मेरा जीवन बर्बाद करने वाली हैं और एक समय आकर यह चीज़ें समाप्त हो जाने वाली हैं। अस्थायी आन्नद हैं मानों अपने अन्तरात्मा की आवाज़ सुननी है। इंसान की अन्तरात्मा उसे बता रही है प्रत्येक अवस्था में उसे बताता है कि यह चीज़ बुरी है। जब इस प्रकार की सोच पैदा करेंगे और अन्तरात्मा की आवाज़ सुनेंगे तो धीरे धीरे बुराई से भी आप ने फरमाया की बच जाओगे। और तीसरी बात यह कि इरादा पक्का हो, कि मैंने इन बुराइयों के निकट भी नहीं जाना और इस पर स्थापित रहने के लिए सम्पूर्ण कुव्वते इरादा भी हो और दुआ भी हो तो फिर यह बुराइयां समाप्त हो जाएंगी और इन के स्थान पर फिर नेकियां लेना शुरु कर देंगी। आप ने जो फरमाया कि नापाक चोला उतारना है। इस की यही अर्थ है कि एक भरपूर कोशिश करो और उस पर स्थायी रहो। मज़बूत इरादा से स्थापित रहो तो अल्लाह तआला की रहमत के हकदार बनोगे।

(उद्धरित मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 138-139 प्रकाशन 1984 ई यू. के)

इस्तिग़फार और तौबा से आग से बचने का बारे में विस्तार से वर्णन करते हुए आप फरमाते हैं

" तौबा इंसान के लिए कोई अधिक या व्यर्थ चीज़ नहीं है इस का प्रभाव केवल क़यामत पर ही आधारित नहीं है बल्कि इस से इंसान की दुनिया तथा धर्म दोनों संवर जाते हैं। और इसे इस संसार में और आने वाली दुनिया में आराम और सुविधा प्राप्त होती है. رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ हे हमारे रब्ब हमें इस संसार में भी आराम और सुविधा के साधन प्राप्त फरमा और आने वाले संसार में भी आराम और सुविधा प्राप्त फरमा और हमें आग के अज़ाब से बचा। देखो रब्बना के शब्द में तौबा कीतरफ ही एक सूक्ष्म इशारा है क्योंकि रब्बना का शब्द चाहता है कि कुछ और रब्बों को जो उस ने पहले बनाए हुए थे उन से विरक्त हो कर अपने रब्ब की तरफ आया और यह शब्द वास्तविक दर्द और वेदना के अतिरिक्त इंसान के दिल से निकल ही नहीं सकता।"(जब इंसान रब्बना कहता है तो कवल अपने मुहं से ही नहीं कहता जब दुआ दिल से निकलती है तो रब्बना कहेगा उस समय जब दिल से निकलेगा। कुछ लोग ज़ाहरी रूप से भी कहते हैं परन्तु वास्तविकता इस दुआ की वही है कि जब दिल से निकले। फरमाया कि)" कब्ब कहते हैं क्रम से कमाल तक पहुंचाने वाले और पालने वाले को। असल में इंसान ने बहुत से रब बनाए हुए होते हैं। और हीलों और धोखों पर उसे भरोसा होता है तो वही उस के रब्ब होते हैं। अगर उसे अपने ज्ञान या बाजुओं पर भरोसा है तो वही उस के रब्ब हैं। अगर अपनी सुन्दरता माल तथा दौलत पर गर्व है तो वही उस के रब्ब हैं अत: इस प्रकार के हज़ारों कारण उस के साथ लगे हुए हैं। जब तक इन सब को छोड़ कर उन से विरक्त हो कर उस वाहिद साझी रहित सच्चे और वास्तविक रब्ब के सामने सिर न झुकाए और रब्बना की दर्द भरी और पिघला देने वाली आवाज़ों से उस के समक्ष न गिरे तब तक वह वास्तविक रब्ब को नहीं समझा। अत: जब इस प्रकार दिलको पिघलाने वाली और जान को गलाने वाली अवस्था से उस के समक्ष अपने गुनाहों को स्वीकार करे तौबा करता और उसे सम्बोधित करता है कि रब्बुना अर्थात असली और वास्तविक रब्ब तो तू ही है मगर हम अपनी ग़लती से बहकते फिरते रहे अब मैंने इन झूठे और ग़लत बुतों को तर्क कर दिया है और सच्चे दिल से तेरी रबूबियत को स्वीकार करता हूं तेरे आस्ताने पर आता हूं। अत: इस के अतिरिक्त ख़ुदा को अपना रब बनाना मुश्किल है। जब तक इंसान के दिल से दूसरे रब और उस का मान सम्मान निकल न जाए तब तक हकीक रब्ब उस की रबूबियत का ठेका नहीं उठा सकता। कुछ लोगों ने झूठ को ही अपना रब बनाया हुआ है। वे जानते हैं कि हमारा झूठ के बिना गुज़ारा नहीं। कुछ चोरी डकेती और धोखाधड़ी को अपनी रब्ब बनाए हुए हैं। उन की आस्था है कि इस के अतिरिक्त उन के लिए रिज़्क की कोई राह नहीं हैं। अत: उन के रब वे चीज़ें हैं।" फरमाया कि " इस प्रकार के लोग जिन को अपने बहानो पर भरोसा होता है उन को ख़ुदा से सहायता और मदद की क्या ज़रूरत? दुआ की ज़रूरत तो उसी को होती है जिस की सारी राहें बन्द हों और कोई रास्ता उस दरवाज़े के इलावा न खुला हो। उस के दिल से दुआ निकलती है رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً इस प्रकार की दुआ करना केवल उन लोगों का काम नहीं जो ख़ुदा को ही अपना रब्ब जान चुके हैं और उन को विश्वास है कि उन के रब्ब के सामने और सारे रब्ब झूठे हैं।" फरमाया कि" आग से अभिप्राय वही आग नहीं होगी जो कयामत की होगी बल्कि दुनिया में भी जो आदमी लम्बी उम्र पाता है वे देख लेता है कि दुनिया में भी हज़ारों तरह की आग हैं। अनुभव वाले जानते हैं कि भिन्न भिन्न प्रकार की आग संसार में पाई जाती है। तरह तरह के अज़ाब, भय, दुख अकाल , बीमारियां असफलताएं और अपमान तथा पतन के भय, हज़ारों प्रकार के भय औलाद पत्नी आदि और रिश्तेदारों के मामले उलझन, अत: ये सब हैं। तो मोमिन दुआ करता है कि सारे प्रकार की आगों से हमें बचा। जब हम ने तेरा दामन पकड़ लिया तो उन सब मामलों से जो इंसानी ज़िन्दगी को कटु करने वाले हैं और इंसान के लिए आग के समान हैं बचाए हैं।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 5 पृष्ठ 187 से 190 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक बार जमाअत को इस तरफ ध्यान दिलाया था कि हमारी जमाअत को यह दुआ बहुत अधिक पढ़नी चाहिए।

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ (अल्बकर: 202)

(उद्धरित मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 1 पृष्ठ 9 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

अत: इस ओर हमें ध्यान देना चाहिए। ताकि अल्लाह तआला अपनी रहमत में लेकर हमें प्रत्येक प्रकार की सांसारिक तथा आख़िरत की आग से बचाए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम फरमाते हैं।

" कुरआन शरीफ में जो ख़ुदा ने यह फरमाया है उस का सारांक्ष यह है कि हे बन्दो ! मुझ से निराश मत हो। मैं रहीम करीम और सत्तार तथा ग़फ्फार हूं और सब से अधिक तुम पर रहम करने वाला हूं और इस तरह कोई भी तुम पर रहम नहीं कर सकता जो मैं करता हूं। अपने पिताओं से अधिक मेरे से मुहब्बत करो वास्तव में मैं मुहब्बत में इन से अधिक हूं। अगर तुम मेरी तरफ आओ तो मैं सारे गुनाह माफ कर दूं। अगर तुम तौबा करो तो मैं तौबा स्वीकार करूंगा और अगर तुम मेरी तरफ धीमें कदमों से भी आओगे तो मैं दौड़ कर आऊंगा। जो आदमी मुझे तलाश करेगा वे मुझे पाएगा और जो आदमी मेरी तरफ लौटेगा वे मेरे दरवाज़ा को खुला पाएगा मैं तौबा करने वाले के गुनाह माफ करता हूं चाहे पहाड़ों से अधिक हों। मेरा रहम तुम पर बहुत अधिक है। और क्रोध कम है क्योंकि तुम मेरी सृष्टि हो। मैंने तुम्हें पैदा किया है इस लिए मेरा रहम तुम सब पर व्याप्त है।"

(चश्मा मअरफत रूहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 56)

अल्लाह तआला हमें अल्लाह तआला की तरफ विशेष होकर जाने वाला बनाए। हम उस का तक्वा प्राप्त करने वाले हों। अपने ईमान और विशवास में बढ़ने वाले हों ताकि हमेशा उस की रहमत से भाग लेते रहें। कभी इस प्रकार का समय न आए कि हम उस की रहमत से वंचित हों और अपने बुरे कर्मों के कारण उस की सज़ा को पाने वाले बनें। अल्लाह तआला की रहम की नज़र हम पर पड़ती रहे।

☆ ☆ ☆

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

पृष्ठ 2 का शेष

वकील माल साहिब लंदन, एडीशनल वकीलुत्तबशीर लंदन और सदर मुबल्लिग़ सिलसिला फिलीपींस ने दफतरी मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया और विभिन्न मुद्दे और मामलों को पेश करके हिदायत प्राप्त कीं।

सदर जमाअत और मुबल्लिग़ इन्चार्ज फिलीपींस ने मुलाकात के दौरान अर्ज़ किया कि कुछ लोग जो शरण में हैं, जो केस पास होने के बाद आगे किसी अन्य देश नहीं जा सकते। यही कारण है कि वे चिंतित हैं और काम भी नहीं करते हैं। उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने कहा कि "वहाँ रहकर मेहनत करनी पड़ती है और पैसे कमाने के लिए काम करना पड़ता है। अगर आप मेहनत कर के और काम करके वहां नहीं रह सकते तो आप उन्हें बता सकते हैं कि पाकिस्तान वापस लौटना बेहतर है।"

शूरा की प्रणाली के संदर्भ में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: फिलीपींस में शूरा की प्रणाली शुरू करें। नेशनल आमला के सदस्य और जमाअतों के सदर हों और नियमों के अनुसार उप-संगठनों के सदस्य होंगे। आप अपनी तजनीद के अनुसार 70 सदस्यों की मज्लिसे शूरा बना दें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: नई जमाअत है आप को उन के मिज़ाज के अनुसार काम करना है। धीरे-धीरे करना होगा। प्रशिक्षण के लिए एक छोटी योजना बनाएँ और एक लंबी योजना बनाएँ। छोटी योजना में नमाज़ अदा करने की तरफ ध्यान हो, कुछ धार्मिक ज्ञान हो, जलसों में उपस्थिति बढ़ाएं। काम करने के लिए जोड़ें। ख़ुद्दाम को खेलों में जोड़ें। एक लगाव होगा। वित्तीय प्रणाली में जोड़ें। वित्तीय बलिदान की तरफ ध्यान दें। एम. टी.ए के महत्त्व को बताएं और एम.टी.ए से जोड़ें।

फिलीपींस में नई मस्जिद निर्माण के संदर्भ में समीक्षा के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने कुछ प्रशासनिक मामलों के संदर्भ में निर्देश दिए। ख़ुत्बा जुम्अ: के अनुवाद के हवाले से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: स्थानीय भाषा में ख़ुत्बा अनुवाद तैयार करके प्रत्येक को पहुंचाएं और अगले शुक्रवार को ऑडियो-वीडियो भी जमाअतों में सुनाएँ। जमाअतों में एम. टी. ए की डिशों की स्थापना के संबंध में, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने कुछ निर्देश प्रदान फरमाए।

तब्लीग़ के हवाले से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि दो चार लोगों को लेकर तब्लीग़ के लिए ट्रेंड करो। फिर धीरे धीरे अपनी टीम को बढ़ाएं। हुज़ूर अनवर ने फरमाया: जमाअत का पैग़ाम पहुंचाने लिए लीफ लेट्स वितरण करें। उन लोगों को बताएं कि मसीह आ गया है। मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की शिक्षाओं को बताएं। जो मेहमान आप के साथ आया है उस से मिल कर तब्लीग़ करें, वह तब्लीग़ करना चाहता था। शहरों से बाहर निकल कर तब्लीग़ करो। गांवों में जाओ। इस प्रकार का प्लान बनाऐं जो वास्तविक तथ्यों पर आधारित हो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के 12 हवारी थे। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के भी 12 हवारी थे। हज़रत मुस्लेह मौऊद वेम्बले कान्फ्रस में अपने 12 हवारी लाए थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया आप भी 10, 12 लोगों को तब्लीग़ करने के लिए, संदेश देने और दूसरों को प्रशिक्षित करने के लिए तय्यार करें। जहां जमाअतें स्थापित हैं उन को अच्छी तरह स्थापित करें। फिर आगे बढ़ो और आगे और स्टेशन बनाते जाओ। पहले एक स्थान पर पहला कदम दृढ़ करो, छावनी बनाओ, फिर आगे पड़ाव करो। हुज़ूर अनवर ने फरमाया: एक सामान्य तब्लीग़ है वह करो। प्रत्येक को संदेश पहुंचाओ, प्रत्येक स्थान पर पहुंचाओ जब ब्रेक हो तो सभी को पहले ही जमाअत अहमदिया के बारे में पहले से ही पता होगा जमाअत का ज्ञान होगा, हर कोई जमाअत को जानता होगा। एक तब्लीग़ यह भी है कि जमाअतें स्थिर हों, मज़बूत और सक्रिय हों, अच्छी तरह से संगठित हों, अच्छी तरह से शिक्षित हों। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, फिलीपींस में इंडोनेशियाई लोग भी हैं। उन्हें तब्लीग़ कैसे करनी है। इस की भी समीक्षा करें। पांच सात साल तो सर्वेक्षण करते हुए गुज़र जाते हैं। फिर इस समय में वहां पांच सात आदमी काम करने वाले मिल जाते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जेलों से भी संपर्क करें और अपने सम्पर्कों में इन लोगों को मैत्रीपूर्ण हिक्मत से पैग़ाम पहुचाओ। अपने जनसंपर्क को बढ़ाएं, पुलिस आयुक्त, सेना, नौकरशाहों के साथ अपने संपर्क बढ़ाएं। जो वीडियो तैय्यार हैं उन्हें दिखाएं और संसद में संबोधन हैं, कैपिटल हिल में सम्बोधन हैं, यूरोपीय संसद में है। पंद्रह मिनट के वीडियो दिखाएं और साथ ही ब्रोशर दे दो। उन्हें पता चल जाएगा कि जमाअत ये सेवा कर रही है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: साल में एक दो बार किसी अच्छे होटल में फंगशन करो, सेमिनार करो। एक संगोष्ठी करो और सम्माननीय लोगों को बुलाओ। इसी तरह क्षेत्र के बड़े मौलवियों को बुलाओ। जन सम्पर्क के लिए उन लोगों से जुड़ें। इस तरह काम के लिए आपके पास एक बजट होना चाहिए। मेरे व्याख्यान दिखाएँ। अन्य लोगों की प्रतिक्रियाएं दिखाएं।

कुरआन के अनुवाद के हवाला से, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: कुरआन करीम का अनुवाद कर रहे हैं तो फिर इस साल प्रकाशित करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: ह्यूमैन्टी फर्सट का प्रोग्राम किसी दूरदराज़ क्षेत्र में करें। इसके लिए जो भी प्रोग्राम है लिखकर इसे तब्शीर में भेजें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने मुबल्लिग़ सिलसिला फिलीपीन्स को अन्त में नसीहत करते हुए फरमाया। अपने काम करने की शक्ति को बढ़ाओ। इस्तिग़फार करते रहो और लाहौल पढ़ते रहो। अपने आप को बच्चा न समझो। घबराना नहीं। आपके सामने यह शेअर होना चाहिए

महमूद करके छोड़ेंगे हम हक को आशकार
रूए ज़मीं को चाहे हिलाना पड़े हमें

बी.बी.सी वर्ल्ड के पत्रकार के साथ साक्षात्कार

इसके अलावा बी.बी.सी वर्ल्ड के एक पत्रकार ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ का इन्ट्रविय़ू भी लिया। इस पत्रकार ने जलसा सालाना यू के 2017 ई के हवाले से एक वृत्तचित्र भी तैयार किया था जिसमें जमाअत का विस्तृत परिचय, जलसा का उद्देश्य, नए अहमिदयों के साक्षात्कार और जमाअत पर होने वाले अत्याचारों का भी उल्लेख मौजूद था। यह वृत्तचित्र बी.बी.सी रेडियो चैनल के मशहूर कार्यक्रम, हार्ट एंड सोल, "द ख़िलाफत इन दी कन्टरी साइड" के नाम से प्रकाशित किया गया था। इस वृत्तचित्र को दुनिया भर में अत्यधिक सराहा गया है। इस साक्षात्कार के निम्नलिखित भाग में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला का नीचे दिया इन्ट्रविय़ू भी प्रकाशित किया गया।

पत्रकार ने सवाल किया कि आज के दौर में ख़िलफात की आवश्यकता क्यों है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: आज के ज़माने कई तथाकथित मुस्लिम उलमा कुरआन की शिक्षाओं को ग़लत रंग देकर पेश कर रहे हैं। जिहाद के अर्थ तो केवल कोशिश और संघर्ष के हैं। तलवार से जिहाद इस्लाम का असल उद्देश्य नहीं है। इस्लाम का मुख्य उद्देश्य अपने नफस और रूह को सुधारना है। यही कारण है कि आज के युग में ख़िलफात की आवश्यकता है।

पत्रकार ने सवाल उठाया कि एक ख़लीफा के रूप में आपके क्या काम है? उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मेरा काम इसी उद्देश्य को आगे लेकर चलना है जिसके लिए संस्थापक सिलसिला अलैहिस्सलाम इस दुनिया में आए अर्थात इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं का पुनरुद्धार करना। आपने फरमाया था कि मैं दो लक्ष्य लेकर आया हूं। सबसे पहले, मनुष्य को अपने निर्माता के अधिकारों का एहसास कराने के लिए और दूसरा उन्हें मानव अधिकारों को महसूस करने के लिए। तो यह मेरा लक्ष्य दुनिया भर में शांति, स्नेह और सद्भाव का संदेश फैलाना है।

पत्रकार ने सवाल किया कि अहमदियों में इस प्रकार की क्या बात है जिसके कारण वे अपने जीवन और धर्म के बारे में भी परवाह नहीं करते हैं? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यदि आप का यह ईमान है कि आपने यह धर्म अल्लाह तआला के लिए अपनाया है, तो जब भी आप कोई बलिदान देते हैं, तो यह अल्लाह तआला की ख़ुशी के लिए है। यही कारण है कि अहमदी अपनी आस्थाओं में बहुत मज़बूत हैं। हमारा विश्वास यह है कि यह दुनिया हमारे जीवन का एकमात्र उद्देश्य नहीं है। इस बात को कुछ तथा कथित मौलवी ग़लत, झूठे तरीके से वर्णन करते हैं और कहते हैं कि यदि तुम किसी का जीवन लेते हो तो स्वर्ग में जाओगे। लेकिन हमारे निकट इस प्रकार नहीं है। अहमदी

हमेशा शांति, प्रेम और सद्भाव का संदेश फैलता है, जबकि कुछ अन्य उग्रवादी समूह इस्लाम की शिक्षाओं को झूठे रंगों में फैला रहे हैं और घृणा फैल रहे हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यदि आपके पास कोई अच्छी बात है और दुनिया को अच्छी चीज़ें देना चाहते हैं तो दुनिया इसे ले लेगी। इसलिए जब लोगों को पता चलता है कि यह इस्लाम का सच्चा संदेश है और इस प्रकार हम अल्लाह तआला के क़रीब पहुंच सकते हैं, तो लोग हमारे साथ जुड़ जाते हैं।

पत्रकार ने सवाल किया कि आपकी जमाअत का भविष्य क्या है? क्या आपको लगता है कि ऐसा समय होगा जब दुनिया के अधिकतर लोग आपकी जमाअत में शामिल होंगे? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मैं बहुत आशावादी हूं और मैं बहुत सकारात्मक सोच रखता हूं। वास्तविक इस्लाम का संदेश पूरी दुनिया में तक ज़रूर पहुंचेगा, और हमारा लक्ष्य यह जानना है कि पूरी दुनिया को महसूस हो जाए कि एक सृष्टिकर्ता है, एक अल्लाह तआला है। एक-दूसरे का सम्मान करते हुए, हम ने यह उद्देश्य प्राप्त करना है और कयामत तक यह संदेश नहीं छोड़ना।

आधिकारिक मुलाकातों और साक्षात्कार के कार्यक्रम दो बजे तक जारी रहे। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद फज़ल लंदन में पधार कर नमाज़ ज़ोहर पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ अपने निवास में पधारे। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद फज़ल लंदन में साढ़े पांच बजे पधार कर नमाज़ असर पढ़ाई ।

व्यक्तिगत और पारिवारिक मुलाकातें

कार्यक्रम के अनुसार आज असर की नमाज़ के बाद विभिन्न देशों से आने वाले जमाअत के मित्रों और परिवार की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ से मुलाकात शुरू हुईं। आज 24 परिवारों के 120 लोग और 13 अन्य दोस्तों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ व्यक्तिगत मुलाकात के लिए हाज़िर थे। इस तरह समग्र 123 लोगों ने मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया।

मुलाकात करने वाले ये परिवार निम्नलिखित 16 देशों से आए थे। पाकिस्तान, मस्कट, कनाडा, सिएरा लियोन, घाना, अमेरिका, नॉर्वे, मॉरीशस, मोरक्को, फ्रांस, जर्मनी, तंजानिया, नाइजीरिया, भारत, स्वीडन और ब्रिटेन।

उनमें से प्रत्येक अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर बनाने के सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों तथा छात्राओं को कलम प्रदान किए और छोटी आयु के बच्चे तथा बच्चियों को चाकलेट प्रदान किए।

मुलाकातों का यह कार्यक्रम शाम पौने नौ बजे तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज ने मस्जिद फज़ल में पधार कर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों को अदा करने का बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज अपने निवास स्थान पर पधारे।

15 अगस्त 2017 (प्रतिदिन मंगलवार)

आज अध्यक्ष साहिब मानवाधिकार समिति, इन्चार्ज बंगला डेस्क और आदरणीय अमीर मुबल्लिग़ इन्चार्ज साहिब घाना ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज के साथ मुलाकात का सौभाग्य हासिल किया और विभिन्न मामले प्रस्तुत करके हिदायत प्राप्त कीं।

अमीर साहिब घाना ने घाना में बनने वाले डेंटल अस्पताल की स्थापना के संदर्भ में अपनी समीक्षा रिपोर्ट पेश की और इसके अलावा घाना में दंत implantation का एक कार्यक्रम चल रहा था इसकी पूर्ति के संदर्भ जो भी काम होने वाला है इस संबंध में रिपोर्ट पेश की। इन मामलों के बारे में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने कुछ प्रबन्धकीय हिदायतों से नवाज़ा।

घाना में, एम.टी ए के लिए वहाब आदम स्टूडियो बना दिया है और नियमित कर्मचारियों को यहाँ निर्धारित किया गया है। अमीर साहिब ने इन के निवास के बारे में हिदायतें लीं

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज ने फरमाया: जमाअत को पास जगह है। उस पर फ्लैट बनाए जाएं। पहले जगह की समीक्षा करें फिर नक्शे को तदनुसार निर्दिष्ट करें। फ्लैट बनाने का कार्यक्रम इस तरह करें कि पहले भूतल पर फ्लैट बनाएं, दूसरे चरण में दूसरी मंजिल पर फ्लैट्स बना लें। हुज़ूर अनवर ने फरमाया: कि जो स्टाफ एकल है वह उनके लिए तीन कमरों का हॉस्टल बना दें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज ने फरमाया: पहले चरण में 20 मस्जिद बनाएं। जब ये पूरी हो जाए तो जो बाकी हैं इस का निर्माण करें।

प्राथमिक स्कूल की स्थापना के संदर्भ में,हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज ने निर्देश दिया कि पहले पांच स्कूलों का निर्माण हो । शुरुआत में, दो दो कमरे बनाओ फिर आवश्यकता अनुसार विस्तार हो जाए। जिन जमाअतों और क्षेत्रों में, स्कूल बनने हैं उन का मूल्यांकन करना है कि कितनी जनसंख्या और बच्चे हैं? निकटतम शहर कौन है? क्षेत्र में सड़कों और रास्तों की गुणवत्ता क्या है? कितने बच्चे स्कूल में प्रवेश करेंगे? इन सभी के आंकड़े इन इलाकों में काम करने वाले मुबल्लिग़ों के द्वारा जमा करवाएं। पहले नियमित सर्वेक्षण करवाएं और इस सर्वेक्षण में इन क्षेत्रों में स्वच्छ पानी के प्रावधान की भी समीक्षा करें।

अमीर साहिब ने सहकारी फार्मिन्ग के बारे में हिदायत चाही। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज ने फरमाया, अभी स्कूलों का काम म शुरू करे। खेती का काम बाद में देखा जाएगा।

तब्लीग़ के संदर्भ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया जिन क्षेत्रों में आप का तब्लीग़ करने का कार्यक्रम है वहाँ अपने मिशनरी भेजें। मुअल्लिमों को भेजें और समीक्षा करें कि कितने गांव हैं, जनसंख्या कितनी है उनकी धार्मिक प्रवृत्ति क्या हैं? उन क्षेत्रों में अभी तक क्या उपलब्धियां प्राप्त हुई हैं? जो लोग इन इलाकों से अहमदी हैं वे ईमान में कितने मज़बूत हैं सारी रिपोर्ट लेकर भिजवाएं फिर और निर्देश दूँगा।

बाग़े अहमद (जलसा गाह) की ज़मीन के बारे में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, यहां मैनजमेन्ट के प्रबंधन के लिए आदमी चाहिए जो वहां बैठे। वहां जो भी प्रबन्ध करने हैं या खेती करने का प्रोग्राम है या फिर खेती का कार्यक्रम या बगीचे है, और जो भी अन्य काम होंगे, वे बिना किसी के बैठे नहीं होंगे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज ने फरमाया वहाँ किसी नौजवान आदमी को रखें । इसके लिए एक नियमित योजना बनाएं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने इस जगह पर पानी की आपूर्ति को लेकर कहा कि बोर्कीनाफ़ासो में सरकार ने थोड़े थोड़े दूरी पर बांध बनाए हुए हैं जहां वे पानी जमा करते हैं और फिर इससे फसलों को पानी उपलब्ध होता है। घाना में डेम बन सकते हैं

दफतरी मुलाकात का यह कार्यक्रम पौने दो बजे तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद फज़ल लंदन में पधार कर नमाज़े ज़ुहर पढ़ाई।

व्यक्तिगत और पारिवारिक मुलाकातें

कार्यक्रम के अनुसार आज असर की नमाज़ के बाद विभिन्न देशों से आने वाले जमाअत के मित्रों और परिवार की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ से मुलाकात शुरू हुईं। आज, 18 परिवार के 90 लोग, इस के अतिरिक्त 18 लोगों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज से मुलाकात हुई । इस प्रकार, 108 लोगों को एक मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

मुलाकात करने वाले ये परिवार निम्नलिखित 16 देशों से आए थे। पाकिस्तान, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, अमेरिका, जापान, जर्मनी, फ्रांस, दुबई, भारत, डेनमार्क और ब्रिटेन।

उनमें से प्रत्येक अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर बनाने के सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों तथा छात्राओं को कलम प्रदान किए और छोटी आयु के बच्चे तथा बच्चियों को चाकलेट प्रदान किए।

मुलाकातों का यह कार्यक्रम शाम पौने छ: बजे तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज ने मस्जिद फज़ल में पधार कर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों को अदा करने का बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज अपने निवास स्थान पर पधारे।

(समाप्त)

☆ ☆ ☆
☆ ☆

अहमदिया ख़िलाफत

यह एक प्रमाणित हकीकत है के इन्सान की रूहानी और भैतिक तरक्की और कौम की वहदत और मिल्लत की एकता के लिए किसी न किसी आसमानी निज़ाम का होना ज़रूरी है। इस कीमती बात को समझने के लिए जब हम कायनात के संगठित तथा दृढ़ निज़ाम पर नज़र डालते हैं तो हर जगह हमें बे-शमार उदाहरण नज़र आते हैं। जैसे सूर्य के निज़ाम का केन्द्र सूर्य है। इन्सानी जिस्म का मरकज़ दिल है। शहद की मक्खियों का केन्द्र बिन्दु उनकी रानी मक्खी होती है। रेल गाड़ियों के डब्बों के लिए एक इन्जन होता है। किस्म-किस्म के फलों से लदे हुए और रंगा रंग फूलों से सजे हुए बाग़ की देखभाल के लिए एक बाग़बान की ज़रूरत होती है।

इसी प्रकार किसी भी ईलाही सिलसिला की रूहानी तरक्की तथा दृढ़ता के लिए उनके लोगों की तालीमो तरबियत और इत्तहाद के लिए ख़िलाफत के आसमानी निज़ाम की ज़रूरत होती है जो अल्लाह तआला की नेअमतों में से एक अज़ीम नेअमत और सबसे कीमती और सुनहरा ताज होता है जो ईलाही जमाअत को पहनाया जाता है और ख़िलाफत ही वह अज़ीमुश्शान शक्ति है जो दिल की तसकीन के समान पैदा करती है। और ख़िलाफत ही वह अमन का गहवारा है जिसमें बेक़रार रूहों को तस्कीन मिलती है और ख़ौफ के वक्त व्याकुल रूहों को अमन व सलामती नसीब होता है। इसका ज़िक्र अल्लाह तआला ने सूरत नूर की आयत 56 में बहुत विस्तार के साथ फरमाया है।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफात के बाद अल्लाह तआला ने अपने फज़ल से मोमिनों को ख़िलाफत की रस्सी से वाबस्ता किया और ख़िलाफत के द्वारा इस्लाम को दोबारा उन्नति के रास्ता पर चलाया। ख़िलाफत की अहमियत व ज़रूरत को सहाबा रिज़वानुल्लाह अलैहिम बख़ूबी जानते थे। इसी लिए हज़रत उस्मान रज़ि० के ख़िलाफत के अहद में जब कुछ उपद्रव करने वाले तत्वों ने ख़िलाफत से बाद बग़वत की तो हज़रत हंज़िला अल-कातिब रज़ि अल्लाह तआला अन्हो ने उम्मत को होशियार करते हुए फरमाया

"عَجِبْتُ لَمَا يَخُوْضُ النَّاسُ فِيهِ يَرُوْمُوْنَ الْخِلَافَةَ اَنْ تَزُوْلَ
وَلَوْ زَالَتْ لَزَالَ الْخَيْرُ عَنْهُمْ وَلَا قَوْ بَعْدَهَا ذُلًّا ذَلِيْلَا
وَكَانُوْا كَالْيَهُوْدِ اَوِ النَّصَارٰى سَوَاءً كُلُّهُمْ ضَلُّوْا السَّبِيْلَا"

(तारीख़ इब्ने सीरीन जिल्द 3 पृष्ठ 73 बहवाला रसाला अलफुरकान मई 1966 ई)

अनुवाद : "मुझे तअज्जुब है कि लोग किन बातों में उलझ रहें हैं। वे चाहते हैं कि ख़िलाफत नष्ट हो जाए।

अगर ख़िलाफत नष्ट हो गई तो ये लोग हर किस्म की बरकत से महरूम और ज़लील हो जाएँगें।

फिर वे यहूद और इसाइयों की तरह हों जाएँगें और राहे हक़ से भटकने में सब बराबर होंगे।"

दुनिया का कोई निज़ाम ,चाहे वह जमहूरी निज़ाम हो या डिक्टेटरशिप का निज़ाम हो ,बादशाही निज़ाम हो या सदराती निज़ाम हो ये दावा नहीं कर सकता के वह इस निज़ाम से जुड़े हुए लोगों की ईमानी व ऐतकादी व अमली व इख़लाकी और रूहानी हालतों को दरुस्त करते हुए सारे समाज के अन्दर एक बे-मिसाल सौहार्द और भाईचारा का माहौल पैदा कर सकता है। अत: अल्लाह तआला ने निहायत तहद्दी के साथ यह फरमाया है के दुनिया की दौलतें ख़र्च करके भी कोई मानव जाति के बीच उल्फत और मुहब्बत पैदा नहीं कर सकता। अल्लाह तआला क़ुरआन क़रीम में फरमाता है

وَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ ط لَوْ اَنْفَقْتَ مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مَّا اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ اَلَّفَ بَيْنَهُمْ ط اِنَّهٗ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ

(सूरत इन्फाल आयत 64)

"और उसने उनके दिलों को आपस में बांध दिया। अगर तू वह सब कुछ खर्च कर देता जो ज़मीन में है तब भी तू उनके दिलों को आपस में बांध नहीं सकता था। लेकिन यह अल्लाह ही है जिसने उन (के दिलों) को आपस में बांधा। वह यकीनन कामिल ग़लबा वाला (और) हिकमत वाला है।

और फिर अल्लाह तआला ने उलफत तथा मुहब्बत स्थापित करने का माध्यम अंबयिा तथा ख़ुलफा का बरकतों वाला वजूद करार दिया है। नबूवत के बाद ख़िलाफत वह सबसे बड़ी नेमत है जिसका वादा अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में दिया है। चुँकि ख़लीफा नबी का नायब होता है और ख़ुलफा के माध्यम से अंबिया के हाथ का लगाया हुआ पौधा पूरे तौर पर तरक्की पाता है इसीलिए नबी के बाद समय की ख़लीफा इस्लामी नुक्ता निगाह से ईताअत योग्य इमाम की हैसियत रखता है और आज निज़ामे ख़िलाफत ही से आलमी सतह पर दीने मुस्तफा की तजदीद व तमकीन जुड़ी है। इस लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी उम्मत को ताकीदी वसीयत फरमाई कि

"فان رئيت يومئذ خليفة الله فى الارض فالزمه وان نهك جسمك واخذ مالك"

(मसन्द अहमद बिन हंबल जिल्द 5 सफा 403)

अर्थात इस ज़माना में अगर ज़मीन पर कोई ख़लीफतुल्लाह देखो तो इसका फिदाई व शैदाई बन जाना चाहे तुम्हारा जिस्म लहुलुहान और तुम्हारी जायदाद नष्ट कर दी जाए।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस ख़बर को अल्लाह तआला ने इस रंग में पूरा किया के दीन मुस्तफा के पुनरुद्धार के लिए सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी अलैहिस्सलाम (1908 इ० 1835 इ०) को बतौर ख़लीफतुल्लाह , मसीह व महदी के रूप में मबऊस किया। आप ने दुनिया के सामने ऐलान किया कि :

"मैं बैतुल्लाह में खड़े होकर यह कसम खा सकता हूँ कि वह पाक वह्यी जो मेरे पर नाज़िल होती है वह इसी ख़ुदा का कलाम है जिस ने हज़रत मूसा और हज़रत ईसा और हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर अपना कलाम नाज़िल किया था। मेरे लिए ज़मीन ने भी गवाही दी और आसमान ने भी। इस तरह पर मेरे लिए आसमान भी बोला और ज़मीन भी कि मैं अल्लाह का ख़लीफा हूँ।"

(एक ग़लती का इज़ाला ,रूहानी ख़ज़ाएन जिल्द 18 सफा 210 मबतुआ 1984 ई लन्दन)

आप की बअसत के द्वारा अल्लामा हज़रत मुहम्मद बिन सिरीन (33 हिजरी से 110 हिजरी) की यह ख़बर भी पूरी हुई कि :

"इस उम्मत में एक ख़लीफा होगा जो हज़रत अबुबकर और हज़रत उमर से बेहतर होगा। कहा गया कि उन दोनों से बेहतर होगा। उन्होंने फरमाया के क़रीब है के वह कुछ अंबिया से भी अफज़ल हो।"

(हज्जुलकराम पृष्ठ 386 नवाब सिद्दीक हसन खान प्रकाशन शाहजहानी भोपाल)

अव्वलो आख़िर की निसबत होगी सादिक यहाँ
सुरत मअनी शबीया मुस्तफा पैदा हुआ
देख कर इसको करेगें लोग रजअत का गुमां
यूँ कहेंगें मुअजज़े से मुस्तफा पैदा हुआ

(दीवान नासिख़ जिल्द 2 पृष्ठ 54 प्रकाशन नवल किशोर लखनऊ 1923 ई)

अल्लाह तआला की सहायता तथा नुसरत के मुताबिक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने दीने इस्लाम के पुन: सुधार के लिए सारी ज़िन्दगी लगा दी लेकिन चूँकि इन्सान की ज़िन्दगी को हमेशा के लिए बका नहीं है इसीलिए अल्लाह तआला ने निज़ामे ख़िलाफत को कायम फरमाया है। सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम इस बारे में फरमाते हैं :

"चूँकि किसी इन्सान के लिए दायमी तौर पर बका नहीं। लिहज़ा ख़ुदा तआला ने यह इरादा किया के रसूलों के वजूद को जो तमाम दुनिया के वजूदों से अशरफ तथा ऊला हैं ज़िल्ली तौर पर हमेशा के लिए कायम रखे। अत: इसी ग़रज़ से ख़ुदा तआला ने ख़िलाफत को तजवीज़ किया ताकि दुनिया कभी और किसी ज़माना में रिसालत की बरकतों से महरूम ना रहे।"

(शहादतुल कुरआन तस्नीफ हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम पृष्ठ 56)

आपके इस इरशाद की रोशनी में तथा रसाला "अलवसीयत" में वर्णन की गई स्पष्ट हिदायत के मुताबिक जमाअत अहमदिया में 27 मई 2008 ई को ख़िलाफत आला मिनहाज नबुवत (नबुव्वत के तरीके पर ख़िलाफत की प्रणाली) कायम हुई। और आज सय्यदना हज़रत अक़दस मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफातुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्ला तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ इस महान पद पर फाएज़ हैं। 27 मई सन 2008 ई को विश्वव्यापी जमाअत अहमदिया ने ख़िलाफत की शत वार्षिकी जुबली के मुबारक मौका पर सारी दुनिया में अज़ीम रूहानी मुसरतों और शादमानियों से मामूर तकरीबों का आयोजन किया। अल्लाह तआला का एहसान है के इस विनीत ने अपनी ज़िन्दगी में यह दिन देखा और ख़ुदा तआला के हुज़ूर शुक्राना के तौर पर ख़िलाफत के विषय पर लिखने की तौफीक़ पाई। अल्हम्मदो लिल्लाह। अल्लाह तआला से दुआ है के वह मेरी इस कोशिश को क़बूल फरमाए। आमीन।

(उद्धरित ख़िलाफत की हकीकत तथा बरकतें,पृष्ठ 19 से 23)

☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 12 July 2018 Issue No. 28

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

तारीख़ अहमदियत

सफ़र लाहौर 20 अगस्त सन 1904 ई.

हज़रत अक़दस ''मुक़द्दमा करमदीन" के कारण परिवार समेत गुरदासपुर में ठहरे हुए थे। 18 अगस्त 1904 ई. की. पेशी के बाद 5 सितम्बर की तारीख़ पड़ी। जमाअत के बार-बार आग्रह से मध्यावकाश से फायदा उठाकर आप 20 अगस्त को लाहौर तशरीफ ले गए। हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब और हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहिब को भी बुलवा लिया ।

2 सितम्बर सन 1904 ई. को जुम्अ: की नमाज़ हज़रत मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब ने पढ़ाई और ख़ुत्बा में सूर: कौसर ...की सार गर्भित तफसीर की कि जिसे सुनकर लोग वाह-वाह करने लगे। उसी सफ़र में हज़रत अक़दस की वह मशहूर तक़रीर सुनाई गयी थी जो ''लेक्चर लाहौर" के नाम से मशहूर है और जिसे हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहिब ने हज़ारों लोगों के सामने ''मन्डुवा मेलाराम" में पढ़कर सुनाया था ।

अल्लाह तआला जब किसी इन्सान को अपनी जनाब में क़ुबूल कर लेता है तो ज़मीन में उसकी क़ुबूलियत फैला दी जाती है। हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब(र) लाहौर पहुँच गए तो उस अवसर पर अख़बार अल-बदर ने एक नोट लिखा कि :-

''हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब की शान में आमतौर पर दूसरे लोगों की ज़ुबान पर यह वाक्य जारी थे कि ''लो साहिब मिर्ज़े का ख़लीफ़ा आ गया।" इसकी असल हक़ीक़त का पता तो अल्लाह तआला को है लेकिन हमने इसलिए वर्णन कर दिया है कि जब अल्लाह तआला किसी को बुलन्दी देना चाहता है और उसे क़ुबूल करता है तो किस तरह लोगों की ज़ुबान पर उसका वर्णन जारी कर देता है।हज़रत हकीम नूरुद्दीन साहिब के आने से लोगों को यह फ़ायदा ज़रूर हुआ कि उससे पहले हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दर्शन और मुलाक़ात के लिए जो लोग डाँवाडोल इधर से उधर और उधर से इधर फिर रहे थे वे एकाग्रचित्त होकर आपके चारों तरफ़ बैठ गये और उस शमा-ए-नूरी की रोशनी में अपने मताए-दीन के बिखरे हुए मोती बटोरने लगे। यह अल्लाह तआला का फज़ल है जिसे चाहे देता है ।

ख़ामोश मुबाहसा

आपके आने की ख़बर सुनकर कुछ आर्य भी आपसे मिलने के लिए आये। जिनमें से एक वकील था। जिसने दावा किया था कि मौलवी साहिब को मैं कुछ ही मिनट में आवागमन के मसले पर बहस करके हरा दूँगा। जब वे लोग बैठ गये तो उनमें से एक ने कहा कि मौलवी साहिब ! यह वकील साहिब आपसे आवा-गमन के बारे में बातचीत करना चाहते हैं। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ने अपनी जेब से दो रुपये निकाले और वकील के सामने रख दिए और कहा कि जनाब ! पहले इन दोनों रुपयों में से एक रुपया उठा लें। इसके बाद मैं आपसे बात करूँगा। वकील साहिब जो बहस के लिए आए थे यह देखकर ख़ामोश होकर बैठ गए और रुपयों को देखना शुरू किया। इसी खामोश की भाषा में मुबाहसा कर रहे हैं हम पास यूँ ही बैठे हैं। अगर कुछ बोलें तो हमें भी फ़ायदा हो ।

वकील ने कहा कि मैं तो मुश्किल में फंस गया हूँ। अगर इन रुपयों में से एक उठा लूँ तो यह सवाल करेंगे कि तुमने दोनों में से यह एक क्यों उठाया दूसरे को क्यों न उठाया। एक को दूसरे पर बिना किसी कारण के क्यों प्राथमिकता दी। इस एतराज़ के बाद आवागमन के समर्थन में मेरा यह एतराज़ झूठा हो जाएगा कि ख़ुदा ने एक को अमीर और एक को ग़रीब क्यों बनाया। यह मुझसे पूछेंगे कि तुम एक रुपया को उठा सकते हो और दूसरे को छोड़ सकते हो तो फिर ख़ुदा क्यों एक को बड़ा दूसरे छोटा नहीं कर सकता। यह कहकर वकील ने बहाना बनाना चाहा और कहा कि वह फिर किसी समय आयेंगे मगर यह वादा न पूरा होना था न हुआ।

(हयाते नूर)

☆ ☆ ☆

D.T.P केंद्र नज़ारत नश्रो इशाअत कादियान

मैं एक कंप्यूटर ऑपरेटर चाहिए।

(नोट: यह घोषणा केवल लजना के सदस्यों के लिए है।)

D.T.P केंद्र नज़ारत नश्रो इशाअत में लेडीज़ कम्पयूटर ऑपरेटर बिल्मुक्ता खाली रिक्त साथान को भरने की ज़रूरत है। लज्ना की उम्मीदवार कवायफ फार्म नज़ारत दीवान से प्राप्त करके उसे पूरा करने के बाद अपने आवेदन शैक्षिक प्रमाणपत्र प्रतियां attested के साथ अमीर पार्टी, सदर जमअत,सदर लजना की पुष्टि के साथ 2 महीने के अंदर भिजवा दें। जज़ाकमुल्लाह

शर्तें: (1) उम्मीदवार की शिक्षा न्यूनतम 2+ (सेकंड डिवीज़न) हो, हिंदी, उर्दू लिखना पढ़ना जानती हो

(2) कंप्यूटर विज्ञान में डिप्लोमा किया हो।

(3) In-Design, MS-Word और In-Page के बारे में बुनियादी जानकारी हो

(4) हिन्दी, उर्दू टाइपिंग में कुशल और कम से कम एक साल का अनुभव हो

(5) टाइपिंग Key Board देखे बिना कर सकती हो, एक घंटे में कम से कम 300 शब्दों लिख सकती हो।

(6) हिंदी टाइपिंग In-Design सॉफ्टवेयर Chanakya Unicode फ़ॉन्ट करना जानती हो और इसी तरह उर्दू टाइपिंग In-Page सॉफ्टवेयर करना जानती हो।

(7) वक्फे जीवन वक्फ नौ तहरीक में शामिल होने वाली सदस्य अपना संदर्भ मंज़ूरी वक्फे नौ और वक्फे नौ भी आवेदन में लिखें

(8) आवेदन में अपने पिता, पति, अभिभावक के पुष्टिकरण के हस्ताक्षर भी हूँ।

(9) उम्मीदवार को साक्षात्कार की तिथि से बाद में सूचित किया जाएगा, साथ ही कादियान साक्षात्कार के लिए आवाजाही का खर्च ख़ुद वहन करने होंगे

(10) कादियान में आवास की जिम्मेदारी उम्मीदवार की अपनी होगी।

सदर अंजुमन अहमदिया में ड्राईवर के रूप में सेवा करने वाले ध्यान दें।

सदर अंजुमन अहमदिया कादियान में ड्राईवर की आसामी भरी जानी है जो दोस्त ड्राईवर के रूप में सेवा करने के इच्छुक हैं वे अपने आवेदन 2 महीने के अंदर नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अंजुमन अहमदिया में भिजवा सकते हैं।

शर्तें: (1) उम्मीदवार के पास ड्राइविंग लाइसेंस और ड्राइविंग का अनुभव होना चाहिए

(2) उम्मीदवार के लिए शिक्षा की कोई शर्त नहीं है

(3) उम्मीदवार को बर्थ सर्टिफिकेट पेश करना आवश्यक होगा

(4) वही ड्राइवर सेवा के लिए लिए जाएंगे जो नूर अस्पताल कादियान से मेडिकल फिटनेस प्रमाण पत्र के अनुसार स्वस्थ और ठीक होंगे

(5) वही उम्मीदवार सेवा के लिए लिए जाएंगे जो साक्षात्कार बोर्ड नियुक्त कार्यकर्ताओं में सफल होंगे।

(6) उम्मीदवार ड्राइवर को दर्जा द्वितीय के बराबर भत्ता तथा अन्य सुविधाएं दी जाएंगी

(7) उम्मीदवार के कादियान आवाजाही की लागत अपने होंगे

(8) यदि उम्मीदवार का चयन होता है तो कादियान में अपने आवास का उसे ख़ुद प्रबन्ध करना होगा।

(नोट: प्रस्तावित आवेदन फार्म नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया कादियान से प्राप्त कर लें, आवेदन फार्म भर कर आने पर उसके अनुसार कार्रवाई होगी)

(नाज़िर दीवान कादियान)

अधिक जानकारी के लिए संपर्क कर सकते हैं

नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदीया कादियान

मोबाइल: 09815433760 कार्यालय: 01872-501130

ई-मेल: nazaratdiwanqdn@gmail.com

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad